UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180711

UNIVERSAL
LIBRARY

H81.092/K16B G.H.371
कन्नोमल लाला।
भारतवर्ष के धुरन्धर कवि।1935

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY
Call No. H 81.092/K16B Accession No. G.H. 371
Author कन्नोमल, लाला
Title भारतवर्ष के धुरन्धर कवि 1935
This book should be returned on or before the date last marked below

भारतवर्ष के धुरन्धर कवि

सम्पादक

लाला कन्नोमल, एम० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

तृतीय बार] १९३५ मूल्य ।=)

Published by
K. Mittra,
at The Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Checked 1969

Printed by
A. Bose,
at The Indian Press, Ltd.,
Benares-Branch.

सूची

प्रथम भाग

संस्कृत-कवि				पृष्ठ
१ वाल्मीकि	..	...	...	४
२ व्यास	...	...	...	६
३ कालिदास	...	...	...	८
४ भारवि	...	...	...	१५
५ श्रीहर्षवर्धन	...	...	...	१५
६ भट्ट	...	..	...	१७
७ भर्तृहरि	...	...	...	१८
८ बाण	...	...	...	१८
९ भवभूति	...	..	..	१९
१० विशाखदत्त	...	...	...	२२
११ माघ	...	...	...	२३
१२ शंकराचार्य	...	...	..	२४
१३ भट्टनारायण	...	...	...	२४
१४ राजशेखर	...	...	...	२४
१५ मुरारि	...	...	...	२६
१६ दामोदर मिश्र	...	...	...	२६

संस्कृत-कवि				पृष्ठ
१७ दण्डी	...	...	...	२७
१८ बिल्हण	...	...	...	२७
१९ कृष्ण मिश्र	...	...	...	२८
२० जयदेव	...	...	...	२८
२१ श्रीहर्ष	...	...	...	२९
२२ उद्दंड	...	...	...	३१
२३ जयदेव	...	...	...	३१
२४ नीलकंठ	...	...	...	३२
२५ पण्डित जगन्नाथराज		...	...	३३
२६ माधव	...	...	...	३३
१—इस पुस्तक में जिन संस्कृत-कवियों का वर्णन किया गया है उनका समय-दर्शक सूचीपत्र			...	३४
२—दूसरे संस्कृत-कवियों का समय-दर्शक सूची-पत्र जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं है			...	३६

द्वितीय भाग

हिन्दी-कवि				पृष्ठ
१ चन्द्र	...	...	...	४१
२ शार्ङ्गधर	...	...	...	४३
३ कबीर	..	...	..	४३
४ नानकदेव	...	...	...	४४
५ नाभादास	...	...	...	४४
६ मीराबाई	...	...	...	४४
७ गंग	...	...	...	४५
८ तुलसीदास	...	...	...	४६
९ बिहारीलाल	...	...	...	४८
१० केशवदास	...	...	...	४९
११ सूरदास	...	...	...	५०
१२ स्वामी हरिदास	...	...	...	५१
१३ देव कवि	...	...	...	५२
१४ सबलसिंह चौहान		...	...	५२
१५ भूषण	...	...	...	५३
१६ मतिराम	...	...	...	५४
१७ श्रीगुरु गोविन्द	...	...	...	५५
१८ कालिदास	...	...	...	५५

हिन्दी-कवि				पृष्ठ
१९ गिरधर	...	...	...	५६
२० ग्वाल	...	...	...	५६
२१ भिखारीदास	...	...	...	५७
२२ पद्माकर भट्ट	...	...	...	५७
२३ पजनेश	...	...	...	५८
२४ ठाकुर प्रथम	...	...	...	५८
२५ ठाकुर द्वितीय	...	...	...	५९
२६ भवन	...	...	...	५९
२७ बाबू हरिश्चन्द्र	...	...	...	५९
२८ राजा लक्ष्मणसिंह		..	...	६०

१—इस पुस्तक में जिन हिन्दी-कवियों का वर्णन किया गया है उनका समय-सूचक सूचीपत्र ...६१

२—दूसरे प्रसिद्ध हिन्दी-कवियों का समय-सूचक सूचीपत्र जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं है ... ६३

भारतवर्ष के धुरंधर कवि

प्रथम भाग

संस्कृत-काव्य

भारतवर्ष काव्य का भाण्डार है। भारतभूमि में काव्य-शक्ति अपनी अन्तिम सीमा पर पहुँच चुकी है। देवताओं के अद्भुत कार्य, गन्धर्वों की रसिक क्रीड़ायें, ऋषियों के वैज्ञानिक और धार्मिक उपदेश और मनुष्यों के विविध प्रकार के आश्चर्य-जनक कर्तव्य ये सब विषय कवि-लेखनी के महत्त्व को प्रकट कर रहे हैं। बड़े से बड़े, ऊँचे से ऊँचे, निरन्तर हिम से आच्छादित पर्वत, जिन पर देवताओं के क्रीड़ा-स्थान हैं; पवित्र से पवित्र नदियाँ, जिनके पवित्र जल-स्पर्श से पाप दूर हो जाते हैं; गहरे और गह्वर वन, जिनमें सूर्यनारायण की किरणें प्रवेश करने को व्यर्थ-प्रयास हो जाती हैं; रमणीक से रमणीक और सुन्दर से सुन्दर उपवन, जो आत्मा को आनन्द-सन्दोह से परिपूर्ण कर देते हैं और मन के उत्साह को बढ़ा देते हैं; अनेक प्रकार के चटकीले भड़कीले सुन्दर पक्षी जो अपनी चित्ताकर्षक बोलियों से चहुँ दिशि पवन को संगीत-पूर्ण कर देते हैं; अनेक प्रकार के सुन्दर सुगन्धित पुष्प नाना प्रकार की फूली फली वनस्पति जैसी कि उष्ण देशों में हुआ

करती है; ये सब विषय भारतीय काव्य-शक्ति उद्दीपन करने में सहायकारी हुए हैं। यहाँ कविता अपरिमित मनो-विचार के पङ्ख लगाकर देवताओं के स्वर्ग आदि लोकों के उच्चतम स्थानों तक जा पहुँची है। इनका वर्णन अनोखे और असामान्य प्रकार से किया गया है। कविता की सुन्दरता को अधिकतर कर देने को, उसके गुणों को गौरवता देने को साहित्य-शास्त्र को भी इसकी सेवा में नियोजित किया है। संस्कृत-कविता के तीन विभाग हैं। अर्थात् ऐतिहासिक काव्य, औपदेशिक काव्य और नाटक। ऐतिहासिक काव्य जिनको महाकाव्य कहते हैं, विशाल कविता के शिखर हैं। केवल पहुँचे हुए कवियों ने, जिनकी देवताओं तक पहुँच थी और जो सांसारिक विद्याओं के पूर्ण वेत्ता थे, इन महाकाव्यों को रचा है। सांसारिक कवियों की इन महाकाव्यों में कदापि गति नहीं हो सकती; इस कारण यह कार्य कविता के धुरन्धर आत्मज्ञानी कवियों के लिए ही छोड़ दिया गया है। छोटे काव्य और और कवियों ने लिखे हैं वे औपदेशिक हैं, परन्तु इनके विषय में लिखने से पहले यह बतलाना आवश्यक है कि काव्य किसे कहते हैं। एक नामी ग्रन्थ-कर्त्ता काव्य का इस प्रकार वर्णन करते हैं।

काव्य मनुष्य के मन की गुप्त से गुप्त डोरियों को हिला देता है और हृदय के रन्ध्रों में प्रवेश कर आनन्द का एक स्थिरतर चमत्कार उत्पन्न कर देता है और श्रेष्ठ और पवित्र

आत्माओं में जो संसार-क्रीड़ावलोकन से अति उत्तम भाव और श्रेष्ठ विचार उत्पन्न होते हैं उनको मीठी भाषा और सुन्दर रीति से प्रकट करना काव्य कहलाता है।

काव्यधर्म, शृंगार और न्याय-सम्बन्धी वैषयिक पदों से प्रतिबद्ध है। छोटे छोटे काव्य कविता के अनमोल रत्न हैं। कवि-कला सुन्दरता और अकृत्रिम लालित्य के दृश्य हैं। इनकी बराबरी संसार भर के साहित्य में नहीं हो सकती। तीसरा भाग नाटक-शास्त्र है। इस पर यूनान और चीनवालों की छाया कुछ भी नहीं पड़ी है, जैसा कि कुछ मनुष्य कहते हैं। इसकी रचना की श्रेष्ठता ऐसी बढ़ी हुई है कि द्वीपान्तर के नाट्य-साहित्य इसकी तुलना नहीं कर सकते। हिन्दुओं के धर्म और सभ्यता के उत्तम से उत्तम और श्रेष्ठ से श्रेष्ठ भावों का दर्पण है। हिन्दुओं के नाटक की प्रशंसा में एक प्रसिद्ध ग्रंथकर्ता का यह कथन है कि भारत के नाटक का आभूषण एक ऐसी अलङ्कृत और सुन्दर पद-रचना है कि जिसका ताना-बाना गद्य-पद्य-मय है और जिसमें शब्द-संकेत बन जाते हैं। संकेत, उपमा, उपमेय, रूपक, इसकी पद-रचनाओं के गुण और अनुकूल विषयों की पवित्रता प्रायः इसके आधार हैं जिनके द्वारा वह अपना अद्भुत प्रभाव दिखलाता है। मन की तरङ्गों की कुसुम-मालाओं को गाढ़ प्रेम-शृङ्खला में गूँथकर अपने अनुकूल और परिचित पुष्पलताओं को असीम पुष्पवाटिका की नवीन और विकसित कलियों से सदैव अलङ्कृत करता है। इस

छोटे लेख में इस विषय का पूरा वर्णन करना असम्भव है। अधिक से अधिक यह हो सकता है कि कुछ प्रसिद्ध संस्कृत-कवियों के ग्रंथों के नाम और किंचित् उनका जीवन-चरित्र लिखा जावे। इस लेख में जिन कवियों का वर्णन किया गया है उनमें से प्रत्येक कवि ऐसे हैं कि जिनके ग्रंथों के वर्णन के विषय में एक स्वतंत्र ग्रन्थ बन जाय। कुछ प्रसिद्ध और धुरन्धर कवियों के ग्रन्थों की किंचिन्मात्र समालोचना इस आशा से की जाती है कि उन ग्रन्थों के गुणों की गौरवता की ओर चित्त आकर्षित होवे और हमारे देश के शिक्षित युवक, जिनके चित्त शेक्सपियर, मिल्टन, वर्ड्सवर्थ, टेनीसन, शैली और कीट्स अँग्रेज़ी कवीश्वरों की कविता में निमग्न हैं, भारत-वर्ष की कविता-भाण्डार की ओर ध्यान देवें।

भारतवर्ष के कवियों की श्रेणी के शिखर पर वाल्मीकिजी का पवित्र नाम है। ये भारतीय काव्य के आदिकवि हैं। इनका संसार-प्रसिद्ध काव्य रामायण है, जो कविता-प्रदेश का कोहनूर मणि* है। सहस्रों वर्ष और अपरिमित काल से यह मणि अपनी अनुपम और अटल प्रभा को उस स्थान पर कि जिस पर केवल दिव्य दृष्टि और बुद्धि का अधि-कार है डालती रही है।

वाल्मीकिजी का आश्रम गंगा-तट पर था। सीता के युगल पुत्र इसी आश्रम में उत्पन्न हुए थे। वाल्मीकिजी इनके

* एक अमूल्य हीरक रत्न है।

गुरु थे। इनका समय रामचन्द्रजी के जीवन का समय है और यह समय ऐतिहासिक काल से परे है। इनके काल के विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि इनका काव्य रामायण पाँचवीं शताब्दी बी० सी० के पहले बन चुका होगा। प्रायः भारतवर्ष के निवासियों को रामायण की कथा अच्छी तरह ज्ञात है, इस कारण उसका वर्णन इस छोटे लेख में करने से वृथा समय-क्षेप होगा। यदि सच्ची कला-कुशलता की परीक्षा मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव डालती है, तो यह काव्य इस प्रभाव से परिपूर्ण है। सृष्टि-रचना, धार्मिक विषय, दृष्टान्त, कथायें, देवताओं के चरित्र और मनुष्यों के इतिहास सब ही इस अद्भुत वाल्मीकिकृत इन्द्रजालरूपी काव्य-रचना में भरे हुए हैं। रचना-शक्ति की प्रबलता, कविता का लालित्य, वीर-रस-सम्बन्धी इतिहास के वर्णन की मनोहरता, प्रकृति की शोभा का वर्णन और पद्य-रचना की अद्भुतता इस पुस्तक में ऐसी है कि जिसके कारण संसार भर के कवियों की श्रेणी में वाल्मीकिजी का प्रथम स्थान है। इतिहास का जो यथार्थ अर्थ है उस अर्थ को देखने से यद्यपि रामायण इतिहास नहीं है, परन्तु यह हिन्दू जाति के प्राचीन समय की सभ्यता का निस्सन्देह दर्पण है। रामचन्द्रजी के समय से लगाकर सिकंदर बादशाह के आक्रमण करने के समय तक का दृश्य है। हिन्दुओं के सत्य-वक्तृत्व की प्रशंसा सदैव से चली आती है। ऐसा प्रमाण रहते

हुए यह समझ में नहीं आता कि प्राचीन कवियों ने रामचन्द्रजी का जीवनचरित्र मनःकल्पित कैसे बना लिया होगा और इस पुस्तक का धर्म-पुस्तक के तुल्य कैसे प्रचार कर दिया होगा ? वाल्मीकिजी बहुत प्राचीन काल में हुए हैं। इनके विषय में ऐसा नहीं कहा जा सकता कि इन्होंने रामचन्द्रजी का चरित्र मनःकल्पित रचा है। आधुनिक पश्चिम-देशीय विद्वानों की शंकायें इस विषय में निर्मूल हैं। उनकी हिन्दू जाति के कर्तव्यता के परिचय की अज्ञानता गहरी है।

दूसरे कवि वेदव्यासजी हैं। इनकी लेखन-शक्ति और दिव्य दृष्टि वाल्मीकिजी से कदापि न्यून नहीं है। यह महाभारत और अठारह पुराणों के रचयिता हैं। इनके नाम का गौरव और महत्त्व हिन्दू जाति के धार्मिक साहित्य पर अपरिमित है। इन्होंने अनेक ग्रन्थ बनाये हैं और इनकी काव्य-शक्ति अतुलनीय है। प्राचीन या आधुनिक समय में ऐसा कोई कवि नहीं हुआ कि जिसने इतने ग्रन्थों की रचना ऐसे महत्त्व से की हो। इनकी समानता नहीं हो सकती। इस लेख में इनके सब ग्रंथों की समालोचना करना असम्भव है, अतः इनके महाभारत ग्रन्थ का इस स्थान पर थोड़ा सा परिचय दिया जाता है।

यह ग्रन्थ हिन्दू-जाति की सभ्यता, इतिहास, धर्म, न्याय, विज्ञान आदि का बृहत् भांडार है। सब पुराण और दूसरे हिन्दू-ग्रन्थों का निकास इसी सोते से है। प्राचीन समय की

पुस्तकों में धार्मिक और नैयायिक ज्ञान के लिए यह अद्वितीय है। इस महाकाव्य के अठारह भाग हैं। इसका मुख्य विषय पाण्डव और कुरु-वंशियों के चरित्रों का वर्णन है। तथापि संसार की उत्पत्ति से हिन्दू जाति ने जो कुछ किया है, सभी कुछ इसमें लिखा है। ईलियड और ओडिसी की समानता महाभारत से देना ऐसा ही है जैसा कि राजपूताने की अरावली पहाड़ियों की समानता अद्भुत शोभा-युक्त हिमालय पर्वत से देना। महाभारत की रचना का समय अनुमान से पाँचवीं शताब्दी बी० सी० है। परन्तु इस समय के बहुत पीछे तक इस ग्रन्थ में रचना होती रही है। काव्य-गौरवता, नाना प्रकार के विषयों का वर्णन, शुद्ध और सरल पद-रचना इस ग्रन्थ में ऐसी है कि संसार भर के साहित्य में कोई ग्रन्थ इसके समान नहीं है। भविष्यत् काल में जब इस देश के विद्वान् स्वतंत्रता से प्राचीन ग्रन्थों की सत्य-परीक्षा में निपुण हो जायँगे उस समय केवल महाभारत ही तो एक ग्रन्थ होगा, जिसकी सहायता से हिन्दू-जाति का इतिहास लिखा जायगा। इसके अमूल्य बृहत्-भांडार में ऐसी विशाल शक्तियाँ भरी हुई हैं कि जिनका उसी समय प्रादुर्भाव होगा जब इस देश के विद्वान् प्राचीन ग्रन्थों की भले प्रकार परीक्षा कर लेंगे। रामायण और महाभारत, जिनमें हिन्दू-जाति की सभ्यता के अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं, ऐसे समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हिन्दुस्तान में इस महान् कार्य

को करने के लिए किसी देशीय निब्यूहर* के जन्म होने की आवश्यकता है।

छोटे छोटे कवियों को छोड़ कर छठी शताब्दी ए० डी० तक कोई धुरन्धर कवि नहीं हुआ। चौथी शताब्दी बी० सी० से लेकर पाँचवीं शताब्दी ए० डी० तक बौद्ध धर्म की गौरवता रही और इस समय का बौद्ध-सम्बन्धी साहित्य है। उसके ग्रन्थों ही में कवि-शक्ति का चमत्कार होता रहा। हिन्दू-कवि-साहित्य के लिए यह समय अंधकार का था। इस समय की कविता का कोई अद्भुत ग्रन्थ नहीं पाया जाता, परन्तु जैसे प्रति रात्रि का अन्धकार प्रातःकाल के सूर्योदय से दूर हो जाता है और दिन प्रकाशमान् होता है, इसी प्रकार भारत-कविता के आकाश में अतुल्य तेजस्वी सूर्य के प्रकाश होने से यह अन्धकार लोप हो गया।

यह सूर्य्य जगत्-प्रसिद्ध कवि कालिदास है जिनको सरस्वती का अवतार ही कहना चाहिए। कालिदास की समानता शेक्सपियर से की गई है, परन्तु कालिदास की कविता की सुन्दरता कुछ निराली ही है; और इस काव्य की सुन्दरता और गौरवता के लिए दूसरी जातियों के काव्य-ग्रन्थों में अन्वेषणायास करना वृथा है। भारतवर्ष के कवियों ने

---

* यह एक प्रसिद्ध पुरुष इतिहास-रचयिता है। ऐसे महानुभाव की आवश्यकता है।

अपने जीवन-चरित्र के विषय में कभी कुछ संकेत नहीं किया इस कारण इनका किस समय में जन्म हुआ और ये किस समय तक संसार में रहे, इस विषय में कुछ लिखना केवल अनुमान ही है। कालिदास के जीवन-समय के विषय में विद्वानों में बहुत कुछ मत-भेद है और इस विषय में बहुत सम्मतियाँ प्रकट की गई हैं; प्रमाणों के अभाव से कोई सम्मति यथार्थ नहीं मानी गई परन्तु बहुत से विद्वानों की यह सम्मति है कि कालिदास के जीवन का समय उज्जैन के राजा विक्रमादित्य का राज्य-काल था जो विक्रमादित्य छठी शताब्दी के पूर्व-भाग में हुए हैं। इस समय संस्कृत-कविता की बड़ी उन्नति थी। कालिदास के जीवन का समय बम्बई के डाक्टर भावदाजी ने निश्चित किया है और यही इसके लिए सराहे जाते हैं। कालिदासजी ने काव्य, नाटक और स्तोत्र बहुत से रचे हैं। इन विषयों पर जो जो इनके ग्रन्थ अभी तक पाये जाते हैं वे ये हैं:—

काव्य

१ रघुवंश १९ सर्गों में

२ कुमारसम्भव

नाटक

१ विक्रमोर्वशी

२ मालविकाग्निमित्र

३ शकुन्तला

छोटे काव्य

१ मेघदूत
२ श्यामलादण्डक
३ शृङ्गारतिलक
४ राक्षस-काव्य
५ पुष्यभवविलास
६ ऋतु-संहार
७ नलोदय

रघुवंश महाकाव्य है। उसमें रामचन्द्रजी, उनके पूर्वज और उत्तराधिकारियों का वर्णन है। यह काव्य १९ सर्गों में है। परन्तु यह सुना जाता है कि इसके और भी सर्ग थे। क्योंकि उन्नीसवें सर्ग में कथा पूर्ण रीति से समाप्त नहीं हुई है। अकस्मात् त्रुटि हो जाने से संभावना होती है कि या तो कालिदास इस काव्य को आप ही पूर्ण नहीं कर पाये या यह कि सम्पूर्ण काव्य अब मिलता ही नहीं है। कुमारसंभव में कुमार देवता की उत्पत्ति का वर्णन है। इस काव्य में सत्रह सर्ग हैं। आदि में शिव और उमा के परस्पर प्रेम और विवाह का वर्णन है। और अन्त में तारक राक्षस का कुमार से वध होना दिखाया गया है। यह दोनों काव्य काव्यकला की अन्तिम सीमा को प्रकट करते हैं। पद-रचना सुन्दर, मीठी और अद्भुत है, जिसमें चमत्कारी उपमायें और रूपक चतुरता से अलङ्कृत किये हुए हैं।

रघुवंश में ऐतिहासिक कथा बहुत होने से कविता-चमत्कार के दिखाने का अवकाश कम मिला है, परन्तु वह कुमार-संभव में बहुत है। हिन्दुस्तान में काव्य-शास्त्र की अन्तिम सीमा को प्रकट करनेवाले कवियों में से कालिदास ही मुख्य हैं। कालिदास के तीनों नाटकों में शकुन्तला-नाटक प्रसिद्ध है। इस नाटक का विषय शकुन्तला और दुष्यन्त में प्रेम होना और इन दोनों का अन्त में मिल जाना सभी जानते हैं। इस नाटक के अनुवाद ने जगत्-प्रसिद्ध जर्मन कवि गैथी को आनन्द के समुद्र में मग्न कर दिया था और उसके मुख से स्वत: प्रशंसा इन वाक्यों में निकल उठी थी—"नये वर्ष की कलियाँ और ढलते हुए वर्ष के फल और जो कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनसे आत्मा सन्तुष्ट, मोहित और आनन्द-परिपूर्ण हो सकती है, और सब पृथ्वी और आकाश की सुन्दर वस्तुओं का समूह इकट्ठा हो जावे तो वह और केवल शकुन्तला का एक बार नाम कह दिया जाय तो इन सब वस्तुओं का एक साथ वर्णन हो जाता है।"

कालिदास के सब ग्रन्थों में शकुन्तला नाटक श्रेष्ठ है और इस नाटक का चौथा अङ्क सब में उत्तम है। इस चौथे अङ्क में शकुन्तला का अपने पिता से बिदा का वर्णन अति अद्भुत है।

पद-रचना की शोभा और कोमलता, प्रकृति की चतुरता के वर्णन की सुन्दरता और अद्भुतता, मन के गुप्त से गुप्त भावों का वर्णन, विशेष करके करुण रस का वर्णन,

वह भी उस समय का कि जब शकुन्तला वन से बिदा होकर गई है, यह सब ऐसे अलङ्कार हैं कि जिनसे दुनिया भर के नाटकों में इस नाटक को अद्भुत और निराला बना देते हैं। यूरुप में जब इस नाटक का अनुवाद पहुँचा तो बहुत से यूरुप के विद्वानों ने इसे पढ़ कर संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर दिया।

दूसरा नाटक विक्रमोर्वशी पाँच अङ्कों में है। इसमें पृथ्वी और आकाश की घटनाओं का वर्णन है। पुरूरवा राजा का उर्वशी अप्सरा से प्रेम होना इस नाटक का मुख्य विषय है। यह कथा मत्स्य-पुराण से उठा कर नाटक के रूप में रक्खी गई है। यह नाटक ऐसी चतुराई से रचा गया है कि घटनायें स्वाभाविक रीति से होती जाती हैं। प्रारब्ध नाटक में मुख्य रक्खा गया है। राजा, अप्सरा और देवताओं का अधिष्ठाता इन्द्र भी प्रारब्ध की दृढ़ शृंखलाओं से बँधे हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा नाटक मालविकाग्निमित्र है। इसमें प्रतिदिन जो हिन्दुस्तान के राजाओं के महलों में घटनायें हुआ करती हैं उनके दृश्य हैं। इससे उस समय की सामाजिक दशाओं का पूरा हाल मालूम होता है। राजा अग्निमित्र का अपनी रानी की दासी मालविका पर मोहित होना मुख्य विषय है। रानी अपनी दासी को अति रूपवती समझ कर राजा की दृष्टि से बचाने का प्रयास करती है और राजा मालविका से गुप्त रीति से मिलता रहता है और रानी से छिपा कर रखने का प्रयास करता है। मालविका अन्त में एक राजकुमारी

निकलती है और राजा की पत्नी होने के सर्वथा योग्य पाई जाती है। कुछ विद्वानों को यह शङ्का है कि यह नाटक कालिदास का बनाया हुआ नहीं है क्योंकि इसमें वह काव्य-चमत्कार नहीं दिखाई देता जो उनके दूसरे ग्रन्थों में है। यह शङ्का वृथा है क्योंकि वही सुन्दर वाक्य और वही सुन्दर उपमायें और रूपक जो कालिदास के दूसरे ग्रन्थों में पाये जाते हैं इसमें भी हैं। यह नाटक अच्छी तरह पढ़ा जाय तो इस शङ्का का स्वयं ही निवारण हो जाता है। छोटी छोटी काव्य-रचना में कालिदास का वही उच्च स्थान है। इनका बनाया मेघदूत जगत्-प्रसिद्ध है और सब विद्वान् मुक्त-कण्ठ होकर एक स्वर से इसकी प्रशंसा करते हैं। इस काव्य में सौ से अधिक श्लोक हैं। एक यक्ष जिसका अपनी स्त्री से वियोग हो गया था और जो बँधुवा बना कर दूर स्थान में रक्खा गया था अपनी स्त्री के वियोग में अति दुःखित था, उसने एक मेघ के टुकड़े को देख कर अपनी स्त्री के पास संदेशा भेजा है; यह दृश्य इस काव्य में दिखाया गया है। उस यक्ष का घर अलकापुरी में था जिसका मार्ग अच्छी तरह से बताया गया है और पति-वियोग में स्त्री की दशा भी दिखाई गई है। यक्ष ने मेघ को प्रिय मित्र बना कर अपना संदेशा देकर भेजा है। सहस्रों वर्षों से यह काव्य कविता की कला का दृश्य समझा गया है और इसकी देखादेखी पीछे से बहुत से काव्य बनाये गये हैं।

दूसरा काव्य श्यामलादण्डक है। यह सरस्वती अर्थात् विद्या की देवी का स्तोत्र बहुत ही मधुर और सरस पदों में है। शृङ्गारतिलक में २३ श्लोक हैं, जो बड़े अद्भुत और लालित्य-पूर्ण हैं। राक्षस-काव्य में किसी पुरुष ने अपनी स्त्री को संदेशा भेजा है। इसकी कविता बड़ी मनोहर है। इसमें चित्रकाव्य के अलंकार बहुत से हैं, जो कालिदास से पीछे के कवियों में पाये जाते हैं।

पुष्पभवविलास एक छोटा सा शृङ्गार-रस का काव्य है। इसमें कवि की मन-तरङ्गों और भावों का पूरा दृश्य है। इन छोटे काव्यों से बढ़ कर छः भागों में ऋतुसंहार काव्य है। इसमें छहों ऋतुओं का वर्णन है। प्रकृति की शोभा का मनोमोहक और सुन्दर वर्णन है और इसी के साथ शृङ्गार-रस के भाव और दृश्य भी मिले हुए हैं। इससे कवि की प्रकृति के साथ बड़ी सम्मति पाई जाती है। स्वाभाविक दृश्यों के और वन-शोभाओं के वर्णन करने में कवि की दृष्टि-सूक्ष्मता और उसकी अतुल चतुरता पाई जाती है। नलोदय काव्य चार सर्गों में है। राजा नल का गया हुआ राज्य फिर मिलना इस काव्य का विषय है। छन्दों की विचित्रता, पद-रचनाओं के दृश्य, चित्ता-नन्दक शोभा का वर्णन और सुन्दर कविता के भावों का निरू-पण इसमें कूट कूट कर भर दिया है। कालिदास के ग्रन्थों की पूरी रीति से प्रशंसा करना असम्भव मालूम होता है। भाषा की अधृष्टता, कवि-रचना की बहुलता, मधुरता और लालित्य,

शोभा-वर्णन की विचित्रता, वाग्धारा-प्रवाह की सरलता, सार्व-गुण देशीय सत्य के वर्णन की चतुरता; ये सब गुण कालिदास को यश के उच्चतम शिखर पर स्थान देते हैं।

दूसरे कवि, जिनका समय छठी शताब्दी ए० डी० का उत्तरार्द्ध है, भारवि हैं। इनका बनाया हुआ काव्य अठारह सर्ग में किरातार्जुनीय है। इसमें अर्जुन और किरात-वेषधारी शिवजी के साथ युद्ध का वर्णन है। इनकी लेखन-प्रणाली बड़ी गंभीर और प्रभावशालिनीउच्चतम श्रेणी की है। उपमायें प्रकृति की शोभा से ली गई हैं और वे बड़ी अद्भुत, स्वाभाविक और मनोहर हैं। पन्द्रहवें सर्ग में सब प्रकार की वाक्य-चतुरता और विविध प्रकार की कविता का चमत्कार है। इसको समझने में बड़े बड़े विद्वान् चक्कर खाते हैं। केवल किरातार्जुनीय ने ही भारतवर्ष के कवियों की श्रेणी में भारवि का नाम सदा के लिए अमर बना दिया है।

रत्नावलि, नागानन्द और प्रियदर्शिका प्रसिद्ध नाटकों के प्रसिद्ध कवि हर्षवर्द्धन भी भारवि के समय के ही लगभग हुए थे। ये कन्नौज के राजा थे। ये ६०६ ईसवी में राजगद्दी पर बैठे थे। ये स्वयं कवि थे। इनका दरबार उस समय के नामी नामी कवि और विद्वानों से भरा रहता था। कादम्बरी के प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट, जिन्होंने इन राजा का जीवनचरित्र श्री-हर्षचरित्र के नाम से लिखा है, इनके दरबार में प्रधान कवि थे। ऊपर लिखे तीन नाटकों के कर्त्ता कोई कोई बाणभट्ट को

कहते हैं परन्तु यह ठीक नहीं मालूम होता। इस विषय में अभी तक विचार भी हो रहा है। इन तीनों नाटकों में पद्य-रचना की सरलता, छन्दों की मधुरता, उपमाओं की अद्भुतता, रसलालित्य और चरित्ररचना की गंभीरता कूट कूट कर भरी है। रत्नावली चार अंकों में है। इसमें राजा उदयन और उसकी रानी वासवदत्ता की दासी सागरिका के बीच में गुप्त प्रेम की कथा है। राजा और दासी में गुप्त मेल होता रहा परन्तु रानी को भी इस मामले का कुछ भेद मिल गया है। इसमें बहुत से विघ्न पड़े हैं परन्तु अन्त में राजा की मनोकामना पूर्ण हो गई है। यह ज्ञात हुआ है कि यह दासी रत्नावलि लंका देश की एक राजकुमारी है। वह जहाज़ के डूब जाने से राजा के दरबार में लाई गई थी। कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्र से यह नाटक बहुत मिलता जुलता है। दूसरा नाटक नागानन्द चार अंकों में है। राजा जीमूत-वाहन संसार के दुःखों से दुःखित होकर अपनी राजगद्दी त्याग करते हैं और वन में जाकर अपने माता-पिता की सेवा में आरूढ़ होते हैं। इस स्थान में गन्धर्वों के राजा की पुत्री के साथ इनका प्रेम हो जाता है। यह सुन कर कि सर्पों के राजा और गरुड़ में ऐसी सन्धि हुई है कि सर्पों के राजा को एक सर्प प्रतिदिन गरुड़ की भेंट करना होगा, जीमूत-वाहन को इस पर बड़ी दया आई है और सर्पों का जीव बचाने के लिए अपने जीव को आपत्ति में डालना स्वीकार

किया है। गरुड़ ने राजा को पहचान लिया है और यह प्रतिज्ञा कर दी है कि अब मैं जीवहिंसा कभी नहीं करूँगा। नाटक के अन्त में गौरी देवी आती हैं और राजा को पुनर्जीवित कर देती हैं। यह नाटक दयाभाव से भरा हुआ है और इस कारण कुछ विद्वानों की यह सम्मति है कि इस नाटक में बौद्ध मत का प्रभाव पड़ा है; परन्तु आत्म-बलिदान करना वैदिक मत में उतना ही पाया जाता है जितना बौद्ध धर्म में; इस हेतु यह शङ्का करना वृथा है। प्रियदर्शिका नाटक भी चार अंकों में है और यह रत्नावलि नाटक का उत्तर है। अंग राजा की पुत्री का नाम प्रियदर्शिका है। राजा अपनी पुत्री को उसके निश्चित पति के पास ले जाता है, परन्तु मार्ग में कलिंग राजा ने उसको पकड़कर कारागृह में रख दिया है। अनेक आपत्तियाँ सहन करती हुई प्रियदर्शिका उनके पास पहुँचती है, जिनसे उसका विवाह निश्चित हुआ था और ये उस पर मोहित हो जाते हैं। अंत में ज्ञात होता है कि यह वही स्त्री है जिसके साथ उनका विवाह होना निश्चित हुआ था। प्रियदर्शिका को एक सर्प ने डसा; परन्तु राजा ने उसे पुनर्जीवित कर दिया; फिर राजा की रानी ने, यह जान कर कि प्रियदर्शिका कौन है, उसको अपने पति की भेंट कर दिया है।

आधी शताब्दी के अन्तर से भट्ट कवि का नाम प्रकट होता है। इनका समय ६५० ईसवी के लगभग है। भट्ट कवि का प्रधान ग्रन्थ रावण-वध बाईस सर्ग का है।

इसमें रामचन्द्रजी के चरित्रों का वर्णन है। इस ग्रन्थ से कवि का भाषा पर अधिकार, शब्दकोष की बहुलता, व्याकरणशास्त्र की धुरन्धरता, साहित्यशास्त्र का चमत्कार पूर्ण रीति से प्रकट होते हैं। यद्यपि इस काव्य में बड़े बड़े लम्बे शब्द और लेखन-प्रणाली अकृत्रिम ज्ञात होती है तथापि काव्य में सुन्दरता और मनोहरता की झलक दिखाई देती है।

भट्ट ही के समय में भर्तृहरि हुए। इनका समय एक ही था। ये भर्तृहरि-शतक के नीति, शृंगार और वैराग्य तीनों शतकों के कर्ता हैं जिनको प्रायः सभी जानते और पढ़ते हैं और उनके श्लोकों को समय समय पर कहते हैं। इतना प्रचार और किसी संस्कृत-ग्रन्थ का नहीं है। वास्तव में संस्कृत-काव्य के ये शतक अमूल्य रत्न हैं। कोई कोई ऐसा कहते हैं कि भर्तृहरि और भट्ट एक ही थे। कोई कोई भर्तृहरि के पुत्र कहते हैं। परन्तु परम्परा से यह सुनते आते हैं कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई भर्तृहरि थे। ये बहुत बड़े वैयाकरण थे। इनके दो प्रसिद्ध ग्रन्थ व्याकरण में वाक्यपद और वाक्यसार हैं। अपनी रानी की दुष्टता से दुःखित होकर इन्होंने संसार को त्याग दिया था।

कादम्बरी और हर्षचरित्र के बनाने से बाण का नाम जैसा प्रसिद्ध हुआ वैसा उनके गद्य-रचित पार्वतीपरिणय ग्रन्थ से नहीं। यह नाटक पाँच अंकों में है। इसमें पार्वती और शिव

के विवाह का वर्णन है। कालिदास और भवभूति के दूसरे नाटकों की तरह यह नाटक नहीं है, तथापि इसके छन्दों में मधुरता और लेखन-प्रणाली में सरलता दिखाई देती है।

आठवीं शताब्दी में नाट्य-शास्त्र की अन्तिम सीमा पर जानेवाले भवभूति का चमत्कार दिखाई देता है। विदर्भ अर्थात् बरार देश के पद्मपुर गाँव के रहनेवाले भवभूति थे। उनके माता-पिता और गुरु के नाम नीलकंठ, जातूकर्णी और ज्ञानाभिधा थे। पिछले दिनों में कन्नोज के राजा के दरबार में भवभूति चले गये थे। यह भी कहा जाता है कि राजा यशोवर्मा के साथ ये काश्मीर को गये थे। ये बड़े विद्वान् ब्राह्मण थे; वेद और शास्त्रों में इनकी बड़ी गति थी, जैसा कि इनके ग्रन्थों से पाया जाता है। इनके ग्रन्थ निम्न-लिखित हैं—

१—महावीरचरित्र,

२—मालतीमाधव,

३—उत्तररामचरित्र।

महावीरचरित्र सात अङ्कों में वीर-रस-प्रधान अद्भुत नाटक है। इसमें रामचन्द्रजी के पराक्रमों का वर्णन वीर-रस में बड़ी चतुराई के साथ लिखा है।

मालतीमाधव दश अङ्क का नाटक है। इसमें उज्जैन के राज-मंत्री की पुत्री मालती का और एक दूसरे राज्य के राज-मंत्री के लड़के माधव का, जो उज्जैन में विद्याध्ययन करता

था, परस्पर प्रेम होने का वर्णन है। इसके साथ माधव के मित्र मकरन्द और राजा के सखा की बहिन मदयन्ती का भी हाल लिखा गया है। मालती और माधव एक दूसरे पर मोहित हो गये हैं परन्तु राजा ने यह निश्चय कर लिया है कि मालती का विवाह मेरे सखा के साथ होगा। किन्तु मालती का प्रेम उस सखा के प्रति कुछ नहीं है। राजा का यह यत्न पूरा नहीं हो सका क्योंकि मकरन्द ने मालती का वेष धारण करके सखा के संग विवाह कर लिया और मालती, माधव का मेल दो बौद्ध मत की साधु स्त्रियों की सहायता से हो गया।

उत्तररामचरित्र सात अङ्कों में, संस्कृत के नामी नाटकों में से एक है। सच्ची काव्य-चतुरता से रामचन्द्रजी के उत्तर-जीवन की घटनाओं का वर्णन इस नाटक में किया गया है। यह नाटक करुण-रस-प्रधान है। सीता का वनवास, उनका वाल्मीकिजी के आश्रम में जहाँ लव-कुश जन्मे हैं रहना, इन लड़कों और रामचन्द्रजी की सेना का युद्ध और अन्त में बारह वर्ष पश्चात् सीता का रामचन्द्रजी से सम्मेलन—यह सब इस नाटक का विषय है। कालिदास और भवभूति बराबर के कवि माने जाते हैं; परन्तु उत्तररामचरित्र में भवभूति कालिदास से बढ़ गये हैं। ऐसी सभी विद्वानों की सम्मति है। करुण और वीर-रस का वर्णन करने में भवभूति निस्सन्देह अद्वितीय हैं।

निम्न-लिखित वाक्यों से कालिदास और भवभूति की तुलना की गई है। कालिदास की रचना में वाक्य-सूक्ष्मता है। वह पाठकों के मन में पूरा प्रभाव करके चमत्कार उत्पन्न कर देती है। भवभूति की रचना में प्रायः वाक्य-बाहुल्य है और रचना-शक्ति की इतनी अधिकता है कि वह पाठकों के चित्त को दृढ़ और बद्ध कर देती है। भवभूति के काव्य में वाच्यार्थ की शोभा है और कालिदास के काव्य में व्यंग्यार्थ की। करुण-रस और वीर-रस के भावों के वर्णन करने में भवभूति कालि-दास से बढ़े हुए हैं। कालिदास की पद-रचना सरल, मनोहर और स्वाभाविक है; पर भवभूति की किंचित् अस्वाभाविक। इनमें प्रभाव-पांडित्य और महत्त्व अधिक है। प्राकृत शोभा और वीर-रस-सम्बन्धी विषय-रचना भवभूति का स्वाभाविक धर्म है। प्रकृति के चमत्कारी दृश्यों को चित्रबद्ध करके खड़ा कर देना भवभूति का काम है। शान्त और रम-णीक शोभाओं को सरल और मनोहर रीति से दिखा देना कालिदास का काम है। सामान्य वस्तु और कार्य्यों में भी सुन्दरता को निकाल कर दिखा देना और सूक्ष्म भावों को पृथक् पृथक् कर बता देना भवभूति की चतुरता है। पद-रचना और वाक्य-विवरण में भवभूति एक ही हैं। भावानुकूल शब्दों के प्रयोग करने में इनकी कुशलता अतुल है। कालिदास के समान इनकी भाषा में भी माधुर्य और कवित्व-चमत्कार है। मत-सम्बन्धी विषयों में कालिदास

संशयात्मा दिखाई देते हैं। इनका जीवन प्रेम-सम्बन्धी घटनाओं से भरा हुआ है। इसके विरुद्ध भवभूति धर्म और शास्त्र-मर्यादा पर दृढ़ परिकर-बद्ध हैं। छोटी से छोटी धर्म-विषय की रीति इनके लेख मे नहीं बचती। कालिदास में चित्त-वैचित्र्य बहुत है। ये भवभूति से कला-कुशलता में बढ़कर हैं। कालिदास की मन-वैचित्र्य की तरंगें एक परिमित सीमा तक जाती हैं; परन्तु भवभूति की गति इससे भी अधिक है। अँग-रेज़ी कवि, जिनकी तुलना कालिदास और भवभूति से की जाती है, शेक्सपियर और मिल्टन हैं। जैसे कि शेक्सपियर और मिल्टन के ग्रन्थ पढ़े बिना कोई अँगरेज़ी साहित्य का विद्वान् नहीं कहा जा सकता वैसे ही कालिदास और भवभूति के ग्रन्थ पढ़े बिना कोई संस्कृत का सरस विद्वान नहीं हो सकता। यदि शेक्सपियर और मिल्टन के नाम अँगरेज़ी-काव्य से कभी लुप्त हो जायँ तो विचार कर सकते हैं कि क्या आपत्ति होगी। इसी प्रकार यदि संस्कृत-साहित्य से कालिदास और भवभूति के ग्रन्थ अन्तर्धान हो जायँ तो आपत्ति की सीमा विचारणीय है। संस्कृत के इन दो धुरन्धर कवियों के ग्रन्थ पढ़े बिना किसी भारतवासी का विद्याध्ययन सम्पूर्ण नहीं समझना चाहिए।

आठवीं शताब्दी के लगभग विशाखदत्त कवि हुए हैं। इनका केवल एक ग्रन्थ मुद्राराक्षस पाया जाता है। यह संस्कृत साहित्य में अद्भुत ग्रन्थ है। यह राजनीति-सम्बन्धी नाटक है। इसमें न तो किसी स्त्री का वर्णन है और न कोई शृंगार-रस का

भाव है। इसका विषय चाणक्य की चतुरता और राजनीति सम्बन्धी प्रपञ्च है। नन्द राजा को गद्दी से उतार कर उसके सहायकारी राक्षस मन्त्री को चन्द्रगुप्त की ओर, जिसको उसने राजा बनाया है, आकृष्ट करना है। यद्यपि इस नाटक में काव्यचमत्कार और मधुरता विशेष नहीं है, तथापि इसकी भाषा प्रभावशालिनी और व्यावहारिक है।

संस्कृत की कवि-मण्डली में माघ कवि अद्भुत चमत्कारी रचनाकारक हैं। इनका समय ८६० ईसवी के लगभग बताया जाता है। यह दत्तक के पुत्र और सुप्रभा के प्रपौत्र थे। इनका महाकाव्य शिशुपाल-वध है। इसमें २० सर्ग हैं। वह संस्कृत के धुरन्धर काव्यों में उच्चस्थानीय है। इसने इन कवि को अमर कर दिया है। हिन्दुस्तान में संस्कृत का कोई विद्वान् ऐसा नहीं है, जिसने इस चमत्कारी काव्य शिशुपाल-वध को कुछ न कुछ न पढ़ा हो। इस काव्य में श्रीकृष्ण का शिशुपाल को वध करना दिखाया गया है। राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल ने श्रीकृष्ण की अति निन्दा की। परिणाम यह हुआ कि अन्त में श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का वध किया। ग्रन्थकर्त्ता की काव्य-शक्ति के चमत्कार का महत्त्व और संस्कृत-वाणी की रचना में कुशलता इस काव्य में अच्छे प्रकार प्रकट होती हैं। इस काव्य में उच्च पद की पदरचना पाई जाती है। ग्रन्थ के प्रति श्लोक में ग्रन्थ-कर्त्ता की विद्या का गौरव और महत्त्व स्पष्ट दिखाई देते हैं।

अद्वितीय वेदान्तदर्शनाचार्य शंकराचार्य ८२० शताब्दी के लगभग हुए। ये कवि भी थे। इन्होंने बड़े सुन्दर और मनोहर स्तोत्र बनाये हैं। शिवजी का शिवानन्द-लहरी नामक शत-श्लोक-बद्ध एक अद्भुत स्तोत्र है। ऐसा ही स्तोत्र पार्वतीजी का सौन्दर्य-लहरी है। महादेवजी का एक दूसरा स्तोत्र ३७ श्लोक-बद्ध शिवभुजंग-स्तोत्र है। ये सब स्तोत्र भक्तिभाव-परिपूरित हैं। पद-रचना मधुर, सुन्दर, मनोहर और रोचक है।

भट्टनारायण आठवीं और नवीं शताब्दी के मध्य में हुए हैं। ये कन्नौज के एक ब्राह्मण थे, जो बङ्गाल देश में जा बसे थे और मृग राजा की उपाधि से प्रसिद्ध हो गये थे। इनका वेणी-संहार नाटक ६ अङ्कों में है। इसकी बड़ी प्रशंसा है। इस नाटक में महाभारत-युद्ध का विषय है। विशेष कर उस घटना का दृश्य, जिसमें द्रौपदी का जूड़ा राज-सभा में खींचा गया और जिस जूड़े को अन्त में द्रौपदी ने अपने पतियों की जय होने पर बाँधा है। पद-रचना प्रभावशालिनी और चमत्कारिणी है। यह वीर-रस का अद्वितीय नाटक है। इसकी जो प्रशंसा दीर्घ काल से होती रही है वह यथार्थ है।

राजशेखर कवि नवीं शताब्दी के लगभग हुए हैं। इनके चार ग्रन्थ पाये जाते हैं; परन्तु कई कारणों से विश्वास होता है कि उन्होंने और भी कई ग्रन्थ रचे हैं, जो मिलते नहीं हैं। इन ग्रन्थों में से किसी किसी ग्रन्थ के थोड़े से टुकड़े मिलते हैं। इनके जो चार ग्रन्थ मिलते हैं वे ये नाटक हैं—

१—बालरामायण,
२—विद्धशालभंजिका,
३—कर्पूरमंजरी,
४—बालभारत।

बालरामायण दश अङ्कों में है जो संस्कृत के सब से बृहत् नाटकों में है। इसमें रामचन्द्रजी के जीवन की घटनाओं का वर्णन है। इस ग्रन्थ के बहुत स्थलों में कविता की सुन्दरता और कवि का कई भाषाओं पर अधिकार पाया जाता है। विद्धशालभंजिका रत्नावलि नाटक से मिलता है और पहले नाटक की अपेक्षा छोटा है। लाट के राजा ने, कोई पुत्र न होने के कारण, अपनी कन्या मृगाङ्कवती को लड़के के वेष में छिपाकर विद्याधरों के राजा की रानी के पास भेजा है। रानी इस पर मोहित हो जाती है, परन्तु अन्त में यह भेद खुल जाता है। नाटक के अन्त में विद्याधरों के राजा के साथ मृगाङ्कवती का विवाह हो जाता है। कर्पूरमंजरी चार अङ्क का नाटक है। इस नाटक में राजा चन्द्रपाल और राजकुमारी कुन्तला का परस्पर प्रेम और अनेक आपत्तियों के पश्चात् विवाह होना दिखाया गया है। चौथा नाटक बालभारत असंपूर्ण है। उसके केवल दो अङ्क उपलब्ध होते हैं। इसमें द्रौपदी के स्वयंवर और महाभारत की कुछ और घटनाओं का विवरण है। काव्य-मधुरता और लेखन-प्रणाली की सुन्दरता के कारणों से राजशेखर की गणना सच्चे कवियों में

है। छन्द-रचना में इनका अधिकार प्रशंसनीय है। इनके अनुप्रास और कविता के अलंकार अद्भुत हैं।

मुरारि कवि का समय ८५५ और ८८४ ईसवी के मध्य में है। इनके पिता का नाम वर्द्धमान और माता का तन्तु-मती देवी था। ये मुद्गल गोत्र के थे। इनके ग्रन्थ का नाम अनर्घराघव है, जिसमें रामचरित्र है। चरित्र-वर्णन ऐसा सरल और प्रभावशाली है कि इसका नाम बाल-वाल्मीकि पड़ गया था। इनके ग्रन्थों के प्रत्येक श्लोक से कोष और संस्कृत-साहित्य पर इनका पूरा अधिकार सूचित होता है। संस्कृत-कवियों की श्रेणी में इनका मध्यम स्थान है।

धार के राजा भोज की सभा के कवि दामोदर मिश्र थे। ये दशवीं शताब्दी के उत्तर भाग में हुए हैं। इनका हनुम-न्नाटक है जिसको महानाटक भी कहते हैं। यह चौदह अङ्कों में है। इसमें हनुमान्‌जी को लक्ष्य करके रामचन्द्रजी के चरित्रों का वर्णन किया गया है। इस नाटक के विषय में यह कहा जाता है कि हनुमान्‌जी ने यह नाटक स्वयं लिखा था; परन्तु यह ज्ञात होने पर कि वाल्मीकिजी ने रामचरित्र इससे अच्छा लिखा है, हनुमान्‌जी ने उन शिलाओं को, जिन पर यह नाटक लिखा था, समुद्र में डाल दिया। किसी धीवर को कुछ शिला के टुकड़े मिल गये थे, जिनको उसने राजा भोज के भेंट कर दिया। यह जो परम्परा चली आती है, यथार्थ हो या निर्मूल, इस विचार की कोई आवश्यकता नहीं है। ग्रन्थ

की वर्तमान दशा से विदित होता है कि वह असम्पूर्ण है। भारवि, कालिदास, माघ और दण्डी, इन चार कवियों में काव्य-वाक्यों की मनोहरता और सुन्दरता के लिए दण्डी प्रसिद्ध है।

दसवीं शताब्दी में धार-निवासी भोजदेव और दण्डी एक समय में रहते हुए पाये जाते हैं। गद्य-ग्रंथ-रचयिताओं में से दण्डी का नाम अद्वितीय है। ऐसा पण्डित कौन सा है जो इनके ग्रन्थ दशकुमारचरित्र को न पढ़ता हो। कविता में इनके दो ग्रन्थ काव्यादर्श और छन्दोविच्छित्ति हैं। इन ग्रन्थों के पढ़ने से इनकी वाक्य-कुशलता पूर्ण रीति से ज्ञात होती है।

ग्यारहवीं शताब्दी के तीसरे या चौथे भाग में बिल्हण कवि हुए हैं। इनका जन्म काश्मीर में हुआ था परन्तु ये मथुरा के निकट आ बसे थे। इन्होंने देशाटन बहुत किया था। अन्त में ये कल्याण के राजा विक्रम की सभा में, विद्यापति के स्थान पर, नियत किये गये थे। चार अङ्क के नाटक करुणासुन्दरी में एक चालुक्य-वंश के राजा और एक विद्याधर-राजकुमारी की परस्पर प्रेम-घटना दिखाई गई है। नाटक के अन्त में इन दोनों का विवाह हो जाता है। भाषा बड़ी मनोहर है और कथा-वर्णन अति रसिक है। विक्रमाङ्क-देवचरित्र अठारह सर्ग का महाकाव्य है। इसमें राजा विक्रम के जीवनचरित्र का हाल है। चूड़ापंचशिखा एक छोटा काव्य है, जिसमें इस कवि का और एक राजकुमारी का,

जिनके यह अध्यापक थे, विषय-वर्णन है। कविता में बिल्हण कवि का उच्च स्थान है और इनके ग्रन्थों में काव्य-कुशलता, मधुरता और पद-सरलता पाई जाती है। चूड़ापंचशिखा शृङ्गार-रस-कविता का एक दृश्य ग्रन्थ है और युवक रसिकों के पढ़ने योग्य है।

ग्यारहवीं शताब्दी में कृष्ण मिश्र नाटकों के रचयिता हुए। इनका प्रसिद्ध नाटक प्रबोधचन्द्रोदय है। इस नाटक में राग, द्वेष, लोभ, विवेक, माया, मोह इत्यादि नाटक के करनेवाले (पात्र) हैं। जो जो दुराचार और दुश्चरित्र उस समय वर्तमान थे उनको पहले तीन अङ्कों में दिखाया गया है। बौद्ध और जैन मत का भी कुछ कुछ वर्णन किया गया है। संसार के महामोह का विवेक की सेना से—जिसके सेनापति क्षमा, बुद्धि और सन्तोष हैं—पराजित होना और विवेक का जय होना दिखाया गया है। नाटकों में इसकी गणना ऊँची नहीं है; परन्तु नीति और धार्मिक उपदेश, जो इस चरित्र द्वारा दिखाये गये हैं, बहुत कुछ हैं। इस कारण यह नाटक अधिक माननीय है। इसमें वर्णन बड़े मनोहर हैं। भाषा स्वाभाविक और सरल है और स्थल स्थल में सच्ची कविता की सुन्दरता चमकती है।

१११६ ईसवी में गीतगोविन्द के रचयिता जयदेव कवि हुए। इनका नाम बड़ा प्रसिद्ध है। ये उच्च जाति के ब्राह्मण बंगाल देश के ग्राम-निवासी थे। ये भगवान् श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। ये कविता बनाकर श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने गाया करते

थे और इनकी स्त्री इनके गाने के साथ नाचती थी। जयदेव कवि बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की सभा में थे। गीतगोविन्द के बारह भाग हैं, और प्रत्येक भाग में चौबीस चौबीस गीत अष्टपदी के नाम से दिये हुए हैं। इसमें प्राचीन भारत के संगीत का चमत्कार पाया जाता है। इस ग्रन्थ की अब भी बड़ी प्रतिष्ठा है।

आर्यावर्त के कवियों में श्रीहर्ष का उच्च स्थान है। ऐसी कहावत चली आती है कि कन्नौज के राजा विजयचन्द के दरबार में इनके पिता किसी दूसरे कवि से कविता के वाद-विवाद में हार गये थे, इस कारण उन्हें घर पर बैठना पड़ा और मरते समय उन्होंने अपने लड़के से इस अपमान का बदला लेने को कहा। अपने पिता की अन्तिम इच्छा पूर्ण करने के लिए श्रीहर्ष ने विद्याध्ययन किया और गङ्गा-तट पर एक महात्मा ने इनको चिन्तामणि मन्त्र सिखा दिया। इस मन्त्र के प्रभाव से ये शास्त्रार्थ में बड़े से बड़े पण्डितों का सामना कर सकते थे और संस्कृत-कविता बड़े प्रभाव से और बिना अवरोध कर सकते थे। ये राज-सभा में फिर आ गये। इन्होंने प्रसिद्ध काव्य नैषधचरित्र को रचा, जिसका सम्मान काश्मीर के सभी पण्डितों और विद्वानों ने किया। यहाँ तक कि सरस्वतीजी ने अर्थात् एक काशीस्थ संन्यस्त महात्मा ने, जो पूर्ण योगी थे, इस ग्रन्थ को स्वयं स्वीकार कर कवि का सम्मान किया। असाधारण काव्य-कुशलता और अगाध पाण्डित्य के कारण

इनको 'नरभारती' की उपाधि दी गई। इनकी उपस्थिति का समय बारहवीं शताब्दी के लगभग है। नैषधचरित्र महाकाव्य बाईस सर्गों का है। ऐसी कहावत चली आती है कि इस ग्रन्थ के १२० सर्ग थे, परन्तु, अति शोक है कि इस ग्रन्थ के और कोई सर्ग अभी तक नहीं मिले।

निषध देश के राजा का चरित्र, विदर्भ-राजकुमारी दमयन्ती के साथ उनका प्रेम, इन राजकुमारी के पास एक हंस द्वारा उनका संदेशा भेजना, दमयन्ती का स्वयंवर-विवाह और उसके जीवन का परिवर्तन और अन्त में राजमहल में दोनों का मिल जाना—ये सब विषय इस काव्य में दिखाये गये हैं। संस्कृत-साहित्य में यह अद्वितीय ग्रन्थ है और जब से यह रचा गया है, आज तक संसार भर के पण्डितों ने इसका सम्मान किया है। लेखन-प्रणाली पाण्डित्य-गर्भित है और प्रत्येक पंक्ति से ग्रन्थकार की अगाध विद्या की सूचना मिलती है। विद्वान् से विद्वान् मनुष्य के लिए इस ग्रन्थ का अर्थ समझना कठिन हो जाता है। साहित्य, अलंकार, काव्य-कुशलता, व्यंग्य-संकेत इत्यादि इस ग्रंथ में कूट कूट कर भरे हैं। यह ग्रंथ कविता और विद्वत्ता की अन्तिम सीमा का है। इसकी तुलना और किसी ग्रन्थ से नहीं हो सकती। इन्होंने जो दूसरे ग्रन्थ रचे हैं, ये हैं—

१—खंडन खंड खाद्य, यह ग्रंथ उसी समय के रहनेवाले कवि उदयन के ग्रंथों का खंडन है।

२—गन्धर्व-कुल-प्रशस्ति (१)।

३—छन्द-प्रशस्ति (२)। ये दोनों ग्रन्थ उन राजाओं की प्रशंसा में हैं जिन्होंने उनका सत्कार किया था।

४—शिवभक्ति, जो शिव की स्तुति है।

५—अर्णव-वर्णन, जिसमें समुद्र का वर्णन है।

६—सशंकचरित्र, यह चम्पू काव्य है जिसमें इस नाम के गौड़ राजा का चरित्र वर्णन किया गया है।

इन ग्रन्थों का सम्मान और प्रशंसा तभी हो सकती है जब यह लोक-दृष्टि के सामने लाये जायँ।

सोलहवीं शताब्दी में उद्दंड और जयदेव कवि हुए। उद्दंड का जन्मस्थान आधुनिक कांची के समीप था। परन्तु राजा शक्तिमान् विक्रांच के सम्मान करने से यह मालाबार में आ बसे थे। इनका रहना जमोरन नाम के राजा की राजधानी में पाया जाता है। इनका एक ही ग्रन्थ पाया गया है। यह मालिकामारुत के नाम से, दस अङ्क का, एक नाटक है। मालतीमाधव नाटक से इसका बहुत मिलान पाया जाता है। इसकी रचना ऐसी मनोहर है कि छठी और सातवीं शताब्दी के काव्य-ग्रन्थों से इसकी तुलना हो सकती है। श्लोक बड़े मनोहर और रोचक हैं और छन्द देश, काल तथा पात्र के अनुसार हैं। दृष्टान्त, कहावतों और दूसरे अलंकारों से वक्तृतायें भरी हुई हैं।

जयदेव, जिनका समय सोलहवीं शताब्दी में है, विदर्भ देश के रहनेवाले थे। ये बड़े नैयायिक थे। प्रसन्नराघव नाम का इनका बनाया हुआ एक नाटक सात अङ्कों में है जिसमें रामचरित्र है। रामचन्द्रजी के प्रसिद्ध जीवनचरित्र से इनके वर्णन में प्रायः भिन्नता पाई जाती है, परन्तु इसको कवि ने बड़ी कुशलता से दरसाया है। इनकी कविता में बड़ी सरलता और मनोहरता पाई जाती है। छोटे काव्य-रचयिताओं में इनका उच्च स्थान है।

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में नीलकण्ठ कवि हुए हैं। ये बड़े कट्टर शैव थे। इनका चम्पू काव्य (जिसमें गद्य पद्य दोनों हैं) नीलकण्ठविजय है। दूसरा ग्रन्थ शिवलीला-वर्णन है। यह बाईस सर्गों का है। इसमें शिवलीला का वर्णन है।

इनके गंगावैतरणी नामक १८ सर्ग के ग्रन्थ में, भगीरथ के परिश्रम से देवलोक से गंगाजी का पृथ्वी पर आना दिखाया गया है। छोटी छोटी कविताओं के रचे हुए इनके ग्रन्थ ये हैं—

१—कालिविडम्बन,

२—सभारञ्जन,

३—अन्योपदेशशतक,

४—नलचरित्र नाटक।

यह नाटक ७ सर्ग का है और श्रीहर्ष के नैषधचरित्र के ढंग पर है। कवियों में नीलकण्ठ की उच्च श्रेणी में गणना

है। इनकी वर्णन-प्रणाली बड़ी मनोहर है। भाव चमत्कारी और भाषा स्वाभाविक है।

जगन्नाथराज पण्डित सत्रहवीं शताब्दी में हुए। इनके काव्य-ग्रन्थ ये हैं—

१—अमृतलहरी—इसमें यमुनाजी की स्तुति है।

२—करुणालहरी—इसमें विष्णु की स्तुति है।

३—प्राणाभरण—इसमें कामरूप के राजा प्राणनारायण के प्रभाव और चमत्कार का वर्णन है।

४—भामिनी-विलास—यह शृङ्गार-रस का बड़ा प्रसिद्ध काव्य है। इसकी श्लोक-रचना स्वाभाविक, सरल और मनोहर है। कविता संगीत-गर्भित और चमत्कारी है।

सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में माधव कवि हुए। इनका उद्धवदत्त नामक कविता का ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ का विषय उद्धवजी के द्वारा वृन्दावन की गोपियों का श्रीकृष्णजी के समीप संदेश भेजना है। यह काव्य संसार-प्रसिद्ध मेघदूत काव्य के ढंग पर बनाया गया है।

नीचे के कोष्ठक से संस्कृत के उन प्रसिद्ध कवियों के नाम, समय और ग्रन्थ विदित होते हैं जिनका इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

नम्बर	कवि	समय		महाकाव्य	नाटक	काव्य
१	वाल्मीकि	छठी शताब्दी	बी० सी०	महाकाव्य	...	...
२	व्यास	पाँचवीं शताब्दी	बी० सी०	महाकाव्य	...	...
३	कालिदास	५५०	ए० डी०	काव्य	नाटक	छोटा काव्य
४	भारवि	६००	ए० डी०	काव्य	...	...
५	श्रीहर्षवर्धन	६०६	ए० डी०	...	नाटक	...
६	भट्टि भट्ट	६४१-५१	ए० डी०	काव्य	...	...
७	भर्तृहरि	६५१	ए० डी०	...	...	छोटा काव्य
८	बाण	७००	ए० डी०	...	नाटक	...
९	भवभूति	८००ए० डी० के लगभग		...	नाटक	..
१०	विशाखदत्त	... ... *	...	...	नाटक	...
११	माघ	८६०	ए० डी०	काव्य	...	...
१२	शङ्कराचार्य	८२०	ए० डी०	...	...	छोटा काव्य
१३	भट्टनारायण	८	..	...	नाटक	...
१४	राजशेखर	९००	ए० डी०	...	नाटक	...
१५	मुरारि	८५५-८८४	ए० डी०	...	नाटक	...
१६	दामोदर मिश्र	९५०	ए० डी०	...	नाटक	...
१७	दण्डी	दसवीं शताब्दी		काव्य	...	...
१८	बिल्हण	ग्यारहवीं शताब्दी का तीसरा या चौथा भाग		काव्य	नाटक	छोटा काव्य
१९	कृष्णमित्र	११००	ए० डी०	...	नाटक	...
२०	जयदेव	१११६	ए० डी०	...	...	छोटा काव्य
२१	श्रीहर्ष	१२००	ए० डी०	काव्य	...	...
२२	उद्दण्ड	१६००	ए० डी०	...	नाटक	...
२३	जयदेव	१६००	ए० डी०	...	नाटक	...
२४	नीलकण्ठ	१६३७	ए० डी०	काव्य	नाटक	...
२५	पं० जगन्नाथराज	१७००	ए० डी०	...	...	छोटा काव्य
२६	माधव	१७००	ए० डी०	...	...	छोटा काव्य

सूचीपत्र उन दूसरे संस्कृत-कवियों का जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं है।

१ अश्वघोष	... प्रथम शताब्दी ए० डी०
२ हर्षण	... चतुर्थ शताब्दी के मध्य में
३ वत्स भट्टि	... पाँचवीं शताब्दी
४ घटखर्पर	... छठी शताब्दी
५ कुमारदास	... " "
६ धनेसर	... सातवीं शताब्दी के पूर्व भाग में
७ हरिश्चन्द्र	... आठवीं शताब्दी
८ मूक	... " "
९ रत्नाकर	... " "
१० अभिनन्दन	... नवीं शताब्दी
११ अमरु	... नवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
१२ भट्ट शिवस्वामी	... " "
१३ कविराज	नवीं या दसवीं शताब्दी
१४ लोलिम्बराज	... दसवीं शताब्दी
१५ क्षेमेश्वर	ग्यारहवीं शताब्दी
१६ सुभट	... " "
१७ गोवर्धन	... " "

१८ लीलासुख ... ग्यारहवीं शताब्दी

१९ हेमचन्द्र ... " "

२० शङ्खधर ... बारहवीं शताब्दी का पूर्वभाग

२१ मङ्ख ... " " "

२२ उमापतिधर " " "

२३ अभयदेव ... " " "

२४ जल्हन ... " " "

२५ काञ्चनाचार्य ... बारहवीं शताब्दी

२६ वासुदेव .... " "

२७ सोमेश्वर ... " "

२८ श्रीधरदास ... " "

२९ अमरचन्द्र ... तेरहवीं शताब्दी के मध्य में

३० रुद्रदेव ... तेरहवीं शताब्दी के अन्त में

३१ विश्वनाथ ... " " "

३२ वीरानन्द ... तेरहवीं शताब्दी

३३ कृष्णानन्द ... " "

३४ मेरुतुङ्ग ... चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में

३५ जगद्धर ... चौदहवीं शताब्दी के मध्य में

३६ विश्वनाथ कविराज ... " " "

३७ शार्ङ्गधर ... चौदहवीं शताब्दी

३८ वेदान्तरत्नक ... " "

३९ धनदराज ... पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्व भाग में

४० सायन ... " " "

४१ वामन भट्ट बाण ... पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्व भाग में

४२ माथुरदास ... पन्द्रहवीं शताब्दी

४३ कृष्णदत्त ... " "

४४ चन्द्रछन्द ... " "

४५ विद्याविधि ... " "

४६ रामचन्द्र ... पंद्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में

४७ कवि कर्पूर ... " " "

४८ श्रीहरि ... पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में

४९ कृष्णकवि ... " " "

५० सोमराज दीक्षित ... सोलहवीं शताब्दी

५१ रूप गोस्वामि ... सोलहवीं शताब्दी के उत्तर में

५२ सुन्दर मिश्र ... " " "

५३ जगमोहन ... " " "

५४ गोविन्दमाखन ... सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में

५५	महादेव	... सत्रहवीं शताब्द के पूर्व
५६	चक्र कवि	... ” ” ”
५७	विक्रम	... ” ” ”
५८	रामभद्र	... सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में
५९	चन्द्रशेखर	... सत्रहवीं शताब्दी के उत्तर
६०	आनन्दराय मुख	... ” ” ”
६१	लक्ष्मीपति	... सत्रहवीं शताब्दी
६२	पाण्डवविजय	... ” ”
६३	शङ्करदीक्षित	... अठारहवीं शताब्दी के उत्तर
६४	रामेश्वर	... ” ” ”
६५	विद्यानाथ	... अठारहवीं शताब्दी

द्वितीय भाग

हिन्दी-कविता

पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त तक संस्कृत-काव्य के श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना हो चुकी थी। संस्कृतकाव्य-रूपी आकाश-मण्डल में प्रचण्डतर प्रकाशमान सूर्य-रूपी कवि-धुरन्धर अपने अतुलनीय प्रभाव का प्रकाश कर चुके थे। आगामी शताब्दियों में अल्प प्रकाशमान नक्षत्र इतस्ततः प्रकाश करते रहे, परन्तु पूर्व समय के मध्याह्न सूर्य की तेज़ी के समान प्रभावशाली धुरन्धर कवियों के सामने उनकी ज्योति मलिन थी। यह अवनति की दशा कितनी ही शोचनीय क्यों न हो, परन्तु हिन्दी-कविता के उदय से इसका परिवर्तन हो गया। हिन्दी-कविता का चमत्कार कुछ कम आश्चर्यकारक नहीं है।

यद्यपि ग्यारहवीं शताब्दी में चन्द्र कवि की अमर, यशस्वी, अति उत्तेजित वीर-रस और देशभक्ति से परिपूरित कविता के प्रचण्ड प्रभाव से अकस्मात् प्रकाशित होकर हिन्दी-कविता सुन्दर, मनोहर और विचित्र शोभास्थान की श्रेणियों में निरन्तर चमत्कार दिखाती रही, तो भी १५ वीं शताब्दी में कबीर, नानक, नाभादास, मीराबाई इत्यादि परमभक्त साधु कविश्रेणी की निर्मल भक्ति-संयुक्त कविता दिव्य प्रतिभा से प्रभावित होती हुई दृष्टिगोचर हुई।

सोलहवीं शताब्दी में गंग, तुलसीदास, बिहारी, केशवदास इत्यादि कविवरों की शुद्ध, स्निग्ध, मनोहर और ललित कविता के दिव्य चमत्कारों का दृश्य दिखाई दिया। थोड़े समय के लिए हिन्दी-कविता का मार्ग भक्ति-परायण कविता के स्थान में फिर जा पड़ा। परन्तु इस समय सूरदास, हरिदास इत्यादि कवियों की परम पुनीत धार्मिक और भक्ति-संयुक्त कविता उत्तुङ्ग और अगम्य शिखरों पर जा पहुँची। १७-१८ और १९ वीं शताब्दियों में भूषण, मतिराम, गिरधर, पद्माकर, पजनेश, ठाकुर, भवन और बाबू हरिश्चन्द्र की शृंगार, वीर, नीति और काव्य-कुशलता-पूर्ण कविता विचित्र विद्युच्छटा से भरी हुई दिखाई दी।

संसार के किसी देश और मनुष्यजाति के इतिहास की शोभा ये कवि अपनी कवि-कुशलता के गौरव एवं चमत्कारी कार्यों के प्रभाव से सदैव बढ़ा सकते हैं। संसार में कविशिरोमणियों की श्रेणी में इनका स्थान अति उच्च है और विकराल काल की ध्वजा पर इनका नाम सदा के लिए अमर लिखा हुआ है।

ग्यारहवीं शताब्दी के अन्त में चन्द्र कवि हुए, जो हिन्दी कविता में प्रसिद्ध अँगरेज़ी कवि चौसर के तुल्य थे। चौहान वंश के राजा पृथ्वीराज के दरबार में इनका बहुत कुछ सम्मान हुआ। ये केवल कवि ही न थे, किन्तु एक बड़े प्रबल योधा भी थे। इन्होंने पृथ्वीराज के संग युद्ध कर के १०९२ ईसवी में प्राण त्याग दिया। इनका प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ पृथ्वीराज

राइसा है। यह बृहद् ग्रन्थ ६९ भागों में विभाजित है। इसमें नाना प्रकार के छन्दों में पृथ्वीराज के वीरत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन है। इस ग्रन्थ में राजपूत जाति का इतिहास है। इस जाति का महत्त्व, वीरता और सभ्यता बड़ी कवि-कुशलता से दिखाई गई है। बीच बीच में और विषयों का भी वर्णन है। हिन्दी-साहित्य में यह ग्रन्थ अद्वितीय चला आता है। यह बीच के समय के राजपूतों के चरित्रों का एक प्रकार का भांडार है। जैसे प्राचीन क्षत्रिय जाति का दृश्य महाभारत में दिखाया गया है, वैसे ही पिछले समय के राजपूतों का दृश्य पृथ्वीराज-राइसा में दिखाया गया है। इस ग्रन्थ का विद्वानों द्वारा मथन होने की आवश्यकता है। नागरी-प्रचारिणी सभा ने जो यह समग्र ग्रन्थ हाल में छपाया है, उसमें कितनी ही त्रुटियाँ रह गई हैं। ऋग्वेद की खोज में और छपाने में जो परिश्रम मैक्समूलर ने अपने जीवन-पर्यन्त किया था, ऐसे ही विद्वान् तथा परिश्रम की इस ग्रन्थ के उद्धार करने में आवश्यकता है। यह खेद का विषय है कि अभी तक हमारे किसी एक दूसरे विद्वान् ने इस ग्रन्थ के उद्धार-कृत्य को अपने हाथ में नहीं लिया। अँगरेज़ी भाषा में अनुवाद न होने के कारण इस ग्रन्थ का परिचय आँग्ल-भाषा-भाषी विद्वन्मंडली को नहीं हुआ है। इसकी भाषा सुबोध हिन्दी नहीं है, इसमें राजपूती बोली का बहुत कुछ सम्मेलन है। छप्पय-रचयिताओं में चन्द्र कवि का स्थान सब से उच्च है। इस छन्द के रचने में पीछे के कवि इस गौरवता तक कदापि

नहीं पहुँच सके। ये बड़े चमत्कारी कवि थे। पृथ्वीराज व उसके वीर राजपूतों की वीरता और पराक्रम इनकी कविता से उद्दीपन किये गये हैं। वीर-रस-गर्वित इस ग्रन्थ के छन्दों से राजपूत-जाति की स्वतन्त्रता का प्रेम और रण में वीर-कर्तव्यों का प्रादुर्भाव हुआ था।

चन्द्र कवि के वंश में शार्ङ्गधर कवि हुए। ये राजा हमीरदेव चौहान के दरबार में कवि थे। १२७३ ई० में इनका जन्म हुआ था। इनके दो प्रसिद्ध काव्य हम्मीर-राइसा और हम्मीरकाव्य हैं।

भारतवर्ष में कबीर का नाम सब जानते हैं। ये जुलाहे थे और इनका जन्म काशी में, सन् १३९९ ई० में, हुआ था। इस समय की खोज से ज्ञात हुआ है कि ये सिकन्दर लोदी बादशाह के समय में हुए थे और १५१९ ई० में इनका देहान्त हुआ था। ये रामानन्दजी के चेले थे। इन्होंने अपना पृथक् पन्थ भी चलाया है। इनके विचार बड़े उदार थे और जाति-पाँति के भेद का इन्होंने कुछ विचार नहीं रक्खा है। ये अनोखे ढंग के धर्मप्रचारक थे। इनकी लिखी हुई साखियों ने इनका नाम हिन्दी-कविता में अमर कर दिया है। इनके दूसरे ग्रन्थ बीजक-रामायण इत्यादि हैं। भाषा की सरलता, भावों की अगाध-सत्यता, काव्य-रचना की सुन्दरता, शब्दों के अर्थ का गुरुत्व और उपमा, रूपक इत्यादि की समय तथा काल की योग्यता इनके

ग्रन्थ—साखियों में कूट कूटकर भर दिये हैं। इस ग्रन्थ से बालकों के उपदेश के लिए बहुत से दोहे पाठशालाओं की पुस्तकों में रक्खे जाते हैं।

संसार के धर्म-प्रचारकों में नानकदेव का नाम सब कोई जानता है। इनकी कविता इनके 'ग्रन्थसाहब' ग्रन्थ से सम्यक् प्रकार सूचित होती है। यह ग्रन्थ बड़ा धर्म-प्रतिपादक और उत्तमताओं से भरा हुआ है। ये सन् १४६९ ई० में हुए और १५३९ ई० में देह छोड़कर परलोक सिधारे।

भक्तमाल के रचयिता नाभादास भी बड़े प्रसिद्ध कवि थे। १४९३ ई० में इनका जन्म हुआ। ये जयपुरस्थ अग्रदास के शिष्य थे। अपने गुरु की आज्ञा से इन्होंने भक्तमाल ग्रन्थ १०८ छप्पय छन्दों में रचा था। इस ग्रन्थ में १०८ भक्तों का चरित्र वर्णित है। कविता के ग्रन्थों में इसका बड़ा सम्मान है। जब से यह ग्रन्थ लिखा गया है तब से, इसके प्रभाव से, बहुत से मनुष्यों का जीवन सुधर गया है।

हिन्दी-कविता के साहित्य में मीराबाई की कविता बड़े सम्मान से देखी जाती है। इनका समय १४९८ ई० से १५६३ ई० तक था। ये राठौर राजवंश की राजकुमारी थीं। इनका विवाह चित्तौर के राजा कुम्भकर्ण के साथ हुआ था। विवाह के कुछ काल अनन्तर ही इनके पति युद्ध में मारे गये और ये विधवा हो गईं। ये बड़ी रूपवती थीं। अपने मन्दिर में श्रीकृष्णजी की मूर्त्ति के सम्मुख अपने

हृद्गत प्रेम को कविता-बद्ध कर अर्पण करती थीं। यह मन्दिर चित्तौर के क़िले में था। ऐसी कहावत प्रचलित है कि इनकी भक्ति तथा प्रेम से श्रीकृष्ण की मूर्त्ति ऐसी प्रसन्न हुई कि उसने आसन त्याग नीचे उतरकर इनकी भक्ति की प्रशंसा की। यह देखकर मीराबाई आनन्द में ऐसी मग्न हो गईं कि इनका आत्मा सदैव आनन्द भोगने की अभिलाषा से स्वकीय कलेवर को त्याग परमात्मा के अनन्त आनन्द-संदोह में मग्न हो गया। दो मन्दिर, जिनमें मीराबाई और उनके पति पूजा करते थे, नब्बे लाख रुपये लगाकर बनाये गये थे।

मीराबाई का रचित रागगोविन्द एक अद्भुत ग्रन्थ है। उसकी कविता मीराबाई के हार्दिक भक्ति के रस में डूबी हुई है और इनके विरचित भजन बड़े सम्मान से गाये जाते हैं।

सोलहवीं शताब्दी के मध्य में प्रसिद्ध कवि गंग हुए हैं। ये बादशाह अकबर के दरबार में मुख्य कवि थे। बादशाह ने बड़ी उदारता से इनका सत्कार किया था। राजा बीरबल और दूसरे नामी दरबारियों ने भी इस कवि को बहुत द्रव्य दिया था। कविता में गंग कवि अद्वितीय थे। इनकी जो कुछ कविता पाई जाती है उससे इनकी कवि-कुशलता का पूरा पता लगता है। इनकी कविता में विशेष कर अकबर बादशाह की गौरवता और प्रभाव दिखाया गया है। इनके और ग्रन्थ अभी नहीं मिले हैं, परन्तु फुटकर कवित्त इनके कितने ही संग्रहों में पाये

जाते हैं और वे बहुत से विषयों पर हैं। ये कविता के अमूल्य रत्न हैं और बड़े सम्मान से कहे जाते हैं।

तुलसीदासजी का हिन्दी-साहित्य में वही स्थान है, जो इँग्लिश-साहित्य में शेक्सपियर का है। संसार के प्राचीन या नवीन कवियों में किसी को इतना सम्मान प्राप्त नहीं हुआ जैसा कि तुलसीदासजी को मिला। भारतवर्ष के, सब जातियों के, बीस करोड़ हिन्दुओं में कदाचित् कोई ऐसा हो जिसने तुलसीदासजी का नाम न सुना हो और इनके अमर ग्रन्थ रामायण को न पढ़ा हो। इस समय भारतवर्ष के सब धर्म-ग्रन्थों में उत्तम स्थान रामायण ने पाया है। १५४४ ई० में इनका जन्म हुआ, १६२४ ई० में ये परलोक सिधारे। ये इलाहाबाद के ज़िले में राजापुर के निवासी, कान्यकुब्ज सरयूपारी ब्राह्मण थे। निम्न-लिखित ग्रन्थ तुलसीदासजी के बनाये हुए कहे जाते हैं—

१—रामायण—चौपाइयों में।

२—कवित्त रामायण।

३—गीतावली रामायण।

४—छन्दावली रामायण।

५—बरवा रामायण।

६—दोहावली रामायण।

७—कुण्डलिया रामायण।

८—सतसई।

९—रामशलाका।
१०—संकटमोचन।
११—हनुमद्बाहुक।
१२—कृष्णगीतावली।
१३—जानकीमंगल।
१४—पार्वतीमंगल।
१५—कर्का छन्द।
१६—रोला छन्द।
१७—झूलना छन्द।
१८—विनयपत्रिका।
१९—कुछ और भी छोटे छोटे ग्रन्थ।

तुलसीदासजी-रचित छन्द, दोहा, चौपाइयों से परिपूर्ण रामायण की बराबरी और किसी हिन्दी-कविता के साहित्य से नहीं हो सकती और न हिन्दी-साहित्य में विनय-पत्रिका के से भाव और अद्वितीय गुण पाये जाते हैं। तुलसीदासजी ने बहुत से तीर्थ-स्थानों में भ्रमण किया था। काशी, अयोध्या, वृन्दावन, प्रयाग इत्यादि तीर्थ-स्थानों में निवास किया था। जो रामायण इनके हाथ की लिखी गई थी, वह अभी तक वर्तमान है। उसके एक या दो पत्र फट गये हैं। भारत-वर्ष की कवि-मंडली में तुलसीदासजी सूर्य-समान गिने जाते हैं। रामायण की कथा और उसके अद्भुत गुण सब को ज्ञात हैं, इस कारण उसका विशेष हाल यहाँ पर लिखना आवश्यक

नहीं है। इस ग्रंथ की भाषा परम शुद्ध, सरल, मनोहर, प्रसाद-गुण-पूर्ण, रस-पूर्ण और धर्माभिप्राययुक्त है। तुलसी-दासजी की अद्भुत लेखनी से सामान्यत: लेख में अद्भुतता दीखने लगती है। हिन्दी-साहित्य में रामायण का सदैव उच्चतम स्थान रहेगा। यह ग्रन्थ एक अनुपम तथा अमर कवि का है, जो सदैव इसी प्रकार सम्मानित बना रहेगा। ऐसा धर्म-प्रधानुयायी आत्मा को मालूम होता है।

बिहारीलाल चौबे ब्रज के निवासी जयपुर के राजा जयसिंह के दरबार में मुख्य कवि थे। इनका जन्म १५४५ ई० में हुआ था। बिहारीसतसई ७०० छन्दों का संग्रह है। इसके लिए राजा जयसिंह ने प्रति छन्द एक एक मुहर भेंट की थी। हिन्दी-साहित्य में इसकी बराबरी का कोई रसिक ग्रन्थ नहीं है। प्रत्येक दोहा कला-कुशलता का रत्न है। भाषा सुन्दर व सरस है, उपमा व रूपक चमत्कारी हैं। प्रत्येक दोहा अर्थ-गौरव से गर्वित है और जब उसका आशय निकाल कर विदित किया जाता है तो बड़ी व्याख्या करने की आवश्यकता होती है। इस भाषा-ग्रन्थ पर ३० से अधिक टीकायें पाई जाती हैं। इस पर एक संस्कृत-टीका भी है। सब दोहे ऐसे शब्दों में विरचित हैं कि जिनके अनेक अर्थ निकल सकते हैं। इस अद्भुत ग्रन्थ को जिसने नहीं पढ़ा उसने हिन्दी-विद्वत्ता की सफलता नहीं पाई है। इस ग्रन्थ की प्रशंसा और मान्यता पढ़ कर ही हो सकती है। पीछे के कतिपय कवियों

ने बिहारी की कविता की छाया पर ग्रन्थ रचे हैं, परन्तु उसकी बराबरी नहीं हो सकती। जैसे तुलसीदास की रामायण के तुल्य कोई ग्रन्थ नहीं है, उसी प्रकार बिहारी-सतसई की तुलना रसिकता में किसी दूसरे ग्रन्थ से नहीं हो सकती। डाक्टर ग्रियर्सन ने, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य के पढ़ने में अपना बहुत अमूल्य समय दिया था, इस पुस्तक को बहुत अच्छी तरह छपाया है और उसके आदि में अँगरेज़ी की एक विस्तृत भूमिका भी लिखी है। जिनको कविता से प्रेम है और जो उसके आनन्द में मग्न रहते हैं, उनके लिए सतसई से बढ़ कर कोई रसिक कविता नहीं हो सकती।

यदि बिहारी अपने विषय के अद्वितीय और अनुपम कवि हैं, तो केशवदास भी हिन्दी काव्य तथा साहित्य के धुरन्धर कवि हैं, मानों हिन्दी काव्य का साहित्य इन्हीं से निकला है।

केशवदास का समय १५६७ ईसवी पाया जाता है। ये सनाढ्य ब्राह्मण थे। टेहरी इनका जन्मस्थान था। बुन्देल-खण्ड में ओरछे के राजा मधुकर की सभा में इन्होंने सम्मान पाया। उन राजा ने इनकी विद्या तथा गुणों की प्रशंसा की थी और इनके पुत्र इन्द्रजीत राजा ने २१ गाँव जागीर में उन्हें भेंट किये थे। इनके ग्रन्थ ये हैं—

१—विज्ञानगीता

२—काव्यप्रिया

३—रसिकप्रिया

४—रामचन्द्रिका

५—पिङ्गल का ग्रन्थ रामालङ्कृत मंजरी

इनके ग्रन्थ विद्वानों के पढ़ने योग्य हैं। इनकी कविता पंडितों तथा बुद्धिमान् मनुष्यों के लिए रची गई है।

रामचन्द्रिका रामायण की छाया पर लिखी गई है। प्रत्येक समय और भाव के अनुकूल छन्दों को निर्मित कर रामचन्द्रजी का चरित्र इसमें दिखाया गया है। इनके ग्रन्थ साहित्य-रत्नों के भाण्डार हैं। इनके अनन्तर के कवियों ने इसमें से रत्नों को चुनकर अपने ग्रन्थों की शोभा बढ़ाई है। इन्होंने काव्य-शास्त्र के भी विषयों पर कविताएँ रची हैं। ये इस शास्त्र के अद्वितीय विद्वान् थे। कविता कैसी होनी चाहिए और उसमें क्या विषय लिखा जाना चाहिए—इत्यादि सब बातों का उपदेश इनके ग्रन्थों में पाया जाता है। अत्यन्त खेद का विषय है कि इनके सब ग्रन्थों का ठीक छपा हुआ कोई संग्रह नहीं मिलता। इस देश के किसी विद्वान् ने अभी तक इन ग्रन्थों की सम्यक् खोज नहीं की है।

सूरदासजी यद्यपि अन्धे थे, परन्तु हिन्दी-कविता के दरबाने में मानों सूर्य ही थे। ये वृन्दावनवासी परमभक्त कवि थे। इनका नाम संसार से कभी लुप्त नहीं हो सकता। इनका जन्म-समय १५८३ ई० के लगभग पाया जाता है। ऐसा कौन हिन्दू है जिसने सूरदास तथा उनके भजनों की प्रशंसा न सुनी हो। सरलता, मनोहरता, सुन्दरता, काव्य-कुशलता और प्रेमभाव की

गम्भीरता सूरदासजी के भजनों में भरी हुई है। ये भजन हृदय के गम्भीर प्रेम से निकले हुए हैं। इनमें कृष्णचन्द्रजी की स्तुति की गई है। संसार भर के साहित्य में इन भजनों की अद्वितीय गणना है। इनका सूरसागर कविता का अमूल्य भाण्डार है। यह ग्रन्थ इस समय जितना पाया जाता है उससे अधिक पाये जाने की संभावना है। अब तक इनके साठ हज़ार भजन मिले हैं। सूरदास के भजनों का अनुभव करना ही केवल सुनना समझना है। विद्वान् इन सुन्दर भजनों को शोभा से अलङ्कृत मानते हैं। भक्त जन इन भजनों से आनन्द पाते हुए ईश्वर के अनन्त आनन्द-सन्दोह में मग्न हो जाने की प्रेरणा पाते हैं। सूरदास बड़े पहुँचे हुए महात्मा थे। अद्वितीय कवि होने पर भी संगीत-शास्त्र में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। वृन्दावन के रमणीय और पवित्र कुञ्जों में जहाँ पर इनको साक्षात् दर्शन होते थे वहाँ इनके प्रेम-परिपूरित आनन्दपूर्ण भजनों की ध्वनि मानों अभी तक गूँज रही है। सूरसागर के अमूल्य रत्न खोजने के लिए किसी उत्साही भक्त और प्रेम-परायण विद्वान् की आवश्यकता है।

सूरदास के समय में ही स्वामी हरिदास भी हुए। ये भी वृन्दावन ही में रहते थे। इनका जन्म-समय १५८३ ई० कहा जाता है। काव्य-रचना में इनका नाम तुलसीदास और सूरदास की श्रेणी में लिया जाता है और ये भी इनके समान भक्त और प्रेमी साधु थे। इनके भजन-ग्रंथ रागसागरोद्भव और

रागकल्पद्रुम हैं। कविता बड़ी मधुर तथा मनोहर है। कविता और संगीत में ये प्रसिद्ध तानसेन के गुरु थे।

देव कवि मैनपुरी के ब्राह्मण थे। १६ वीं शताब्दी के अन्त में इनका जन्म होना पाया जाता है अर्थात् १५८४ ई० में इनका जन्म हुआ था। ये एक अद्भुत कवि थे। इन्होंने ७२ ग्रन्थ बनाये हैं। इन ग्रन्थों में से निम्न-लिखित ११ ग्रन्थ विशेष प्रशंसनीय हैं—

१—प्रेमतरंग
२—भानुविलास
३—रसविलास
४—रसानन्दलहरी
५—श्यामविनोद
६—काव्यरसपिङ्गल
७—अष्टयाम
८—देवमायाप्रपञ्च नाटक
९—प्रेम-दीपक
१०—सुमालविनोद
११—राधिका-विलास

देव कवि बड़े विद्वान् थे। वे एक प्रकार से उनके अनन्तर हुए कवियों के गुरु कहे जा सकते हैं। इनके सब ग्रन्थ छपे नहीं हैं। इस कार्य की आवश्यकता है कि ये ग्रन्थ खोज कर छापे जायँ।

सबलसिंह चौहान १६७० ई० में हुए। इन्होंने महाभारत के चौबीस हज़ार श्लोकों का दोहों और चौपाइयों में अनुवाद कर एक बड़ा ग्रन्थ रच दिया। कोई इनको चन्द्रगढ़ का और कोई सामलगढ़ का राजा बताते हैं; परन्तु वास्तव में ये इटावा ज़िले में कुछ गाँवों के ज़मींदार थे। इनके रिश्तेदार हरदोई ज़िले में जा बसे हैं। इन्होंने बहुत ग्रन्थों की रचना की है और इनके अनुवाद किये हुए महाभारत को सब सम्मान से पढ़ते व प्रशंसा करते हैं।

हिन्दी-कविता को प्रभावशाली बनानेवाले भूषण कवि हुए हैं। ब्राह्मण होने पर भी ये वीर-रस से परिपूर्ण थे। इनकी सब कविता वीररस-पूरित है। चन्द्र कवि को छोड़ कर ऐसे सब कवियों में इनका नाम प्रथम है जिन्होंने अपनी वीर कविता के प्रभाव से सेना को युद्ध में नियुक्त किया हो। ये कानपुर ज़िले में तिकवाँपुर ग्राम के निवासी थे। परन्तु सितारे के महाराज शिवराज सोलंकी के दरबार में इनका बहुत समय व्यतीत हुआ। वहाँ इनकी कविता का बड़ा आदर हुआ। वहाँ इनको अत्यधिक धन मिला। ये ऐसे कवि थे कि जिन्होंने अपनी वीर-रस की कविता के उत्तेजन से निर्भय और शूरवीर मरहठे योद्धाओं के दलों को मुसलमान बादशाहों से युद्ध में भिड़ा दिया और जिसका परिणाम यह हुआ कि यवनों का राज्य तितर-बितर हो गया। पन्ना के राजा छत्रपाल के दरबार में भी इन्होंने कुछ दिन निवास किया, परन्तु सितारे के मरहठे महाराज से

अतुल द्रव्य प्राप्त करके इन्होंने दूसरे राजाओं से दान लेना छोड़ दिया। इनके बनाये हुए निम्न-लिखित ग्रन्थ कहे जाते हैं—

१—शिवराज-भूषण

२—भूषणहज़ारा

३—भूषणउल्लास

इन कवि के बनाये हुए कई हज़ार फुटकर कवित्त इधर उधर पाये जाते हैं। भूषण कवि देशभक्ति के अद्वितीय भूषण थे। इनके हाथ में भाषा क्या थी, मानों वीर कवितानल प्रचण्ड करने के लिए ईंधन ही था। शिवराज के कर्तव्य-वर्णन की कविता एक वीर-रस का दृश्य-रूप है। संसार भर के साहित्यों में ऐसी वीर-रस-प्रधान रस-पूर्ण कविता कहीं नहीं पाई जाती। प्रत्येक शब्द क्या है, मानों योद्धाओं को युद्ध करने के लिए और अमर शूरवीरता दिखाने के लिए रण की विजय-दुन्दुभि है। सन् १६८१ ई० में इनका जन्म हुआ।

इसी समय में मतिराम कवि भी हुए हैं। हिन्दी की कवि-श्रेणी में इनका उच्च स्थान है। कानपुर ज़िले के तिकवाँपुर ग्राम में इनका जन्म हुआ था। ये जाति के ब्राह्मण थे। कई बड़े बड़े राजाओं के दरबार में ये रहे थे, परन्तु कमायूँ के राजा उद्दत-चन्द्र और कोटा-बूँदी के भानुसिंह हाड़ा और बुँदेले फ़तहसिंह के समीप इनका बहुतसा समय व्यतीत हुआ। इनके ग्रंथ ये हैं—

१—ललित-ललाम—जिसमें कोटे के राजा भानुसिंह की प्रशंसा अलङ्कृत काव्य में की है।

२—छन्दसागर—जिसमें अनेक प्रकार के छन्द दिये हैं और बुँदेले फ़तहसिंह की प्रशंसा की है।

३—रासराज—यह एक नायिका-भेद का ग्रंथ है।

मतिराम श्रेष्ठ कवि थे और इनके अनन्तर के कवियों ने इनकी विशेष प्रशंसा की है। इनके ग्रन्थों में पद-रचना की मनोहरता, विचार की गम्भीरता और अलङ्कारों की विचित्रता भरी हुई है।

सिक्ख मत को स्थापित करनेवाले श्रीगुरु गोविन्दजी जगत्प्रसिद्ध हैं। सन् १६८१ ई० में पटने में इनका जन्म हुआ। ये गुरु तेग़बहादुर के पुत्र थे। गुरु तेग़बहादुर का औरंगज़ेब बादशाह ने वध करा दिया था। इनकी कविता प्रसिद्ध ग्रंथसाहब में पाई जाती है। भारतवर्ष की कविता में इसका भी बड़ा आदर है। भाषा की वाक्य-सरलता तथा स्पष्टता, धार्मिक और नैतिक भावों की उच्चता और पद-प्रणाली की मनोहरता श्रीगुरु गोविन्दजी के वचनों व भजनों में ऐसी है कि जिनका सादृश्य नहीं हो सकता। कविता रचने में इनका ध्यान विचारों की तरफ़ बहुत कुछ रहा है और भाषा की तरफ़ कम, इस कारण कई भाषाओं के शब्द इनकी कविता में पाये जाते हैं। व्रजभाषा, पंजाबी और उर्दू ये भाषायें इसमें मिली हुई हैं।

सत्रहवीं शताब्दी के अंत में और १८ वीं शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी-कविता के कवि कालिदास हुए। ये गङ्गा-तट पर किसी गाँव के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। ये बादशाह औरङ्गज़ेब के साथ गोलकुण्डा गये थे और

बहुत समय तक दक्षिण देश में रहे। तत्पश्चात् जम्बू के महाराजा जङ्गजीतसिंह रघुवंशी के दरबार में रहे। इन महाराजा की प्रशंसा में इन्होंने वधूविनोद नाम का एक अद्भुत ग्रन्थ रचा था। इन्होंने एक हज़ारा भी बनाया है जिसमें संवत् १४८० से संवत् १७७५ तक के ५२१२ कवियों की कविता संगृहीत है। यह बड़ा अद्भुत ग्रन्थ है। इनके दूसरे ग्रन्थ का नाम जँजीराबन्ध है। इस ग्रन्थ में बड़ी अद्भुत काव्यकुशलता है। यद्यपि ये संस्कृत के कालिदास कवि के साम्य में नहीं हैं, तथापि हिन्दी-कवियों में इनका बड़ा आदर है।

आर्यावर्त-निवासी गिरधर कविराज का जन्म १७३० ई० में हुआ। इन्होंने बहुत सी नीति-सम्बन्धी कुण्डलियाँ बनाई हैं। ये इस विषय में बड़े प्रसिद्ध कवि थे। ये कुण्डलियाँ ऐसी अद्भुत, स्पष्टार्थ और गुण-गर्वित हैं और इनकी भाषा ऐसी सरल है कि पाठशालाओं में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं उनमें बहुत कुछ इनका भाव रक्खा जाता है।

१७१६ ई० के लगभग ग्वाल कवि हुए। ये एक धुरन्धर कवि थे। इनके ग्रन्थ निम्न-लिखित हैं—

१—नखशिख

२—गोपीपच्चीसी

३—यमुना-लहरी

४—साहित्य-भूषण

५—भक्तिभार

६—शृङ्गार-दोहा

७—शृङ्गार-कवित्त

८—साहित्य-दर्पण

९—कुछ दूसरे कवियों की कविता का संग्रह है।

ग्वाल कवि मथुरा-निवासी थे। इनकी कविता की बड़ी प्रशंसा है।

भिखारीदास भी साधु कवियों में गिने जाते हैं। ये बुन्देलखण्ड के एक कायस्थ थे। इनका जन्म १७२३ ई० में हुआ था। ये हिन्दी-कविता के बड़े नामी कवियों में गिने जाते हैं। इनकी कविता में वाक्य तथा विचार दोनों के अद्भुत गुण हैं। अब तक इनके जो पाँच ग्रन्थ मिले हैं, ये हैं—

१—छन्दार्णव पिङ्गल

२—रससारांश

३—काव्य-निर्णय

४—शृङ्गार-निर्णय

५—वाग्विहार

बाँदा के मोहनलाल भट्ट के पुत्र पद्माकर भट्ट थे। इनका जन्म १७८१ ई० में हुआ था। ये रघुनाथराव पेशवा के दरबार में नियुक्त थे। किसी समय एक छन्द के सम्मान में इन राजा ने इनको एक लक्ष मुद्रायें भेंट की थीं। तत्पश्चात् ये जयपुर में आ बसे। वहाँ राजा सवाई जगतसिंह की प्रशंसा में इन्होंने जग-

द्विनोद ग्रन्थ रचा। इसके सम्मान में उन्होंने इनको सुवर्ण, हाथी और रथ भेंट किये। इसके अनन्तर ये राज्य से चले आये और गङ्गा-तट पर आ निवास किया। गङ्गाजी की स्तुति में इन्होंने गङ्गालहरी बनाई। ऐसा कौन मनुष्य है जिसने पद्माकर कवि का नाम और कविता न सुनी हो। इनकी कविता में अनुप्रास, उपमा, अन्योक्ति अलङ्कार बहुत पाये जाते हैं। इनकी भाषा श्राव्य और रोचक है, जिसमें कविता के अवाच्य और विचित्र राग विशेषता से पाये जाते हैं।

पद्माकर के ढङ्ग पर पजनेश की कविता भी है। उसी प्रकार की भाषा और उसी तरह के अनुप्रास हैं। ये कवि बुंदेलखण्ड के पन्ना राज्य में हुए थे। १९वीं शताब्दी के प्रथम भाग में इनका उपस्थिति-समय पाया जाता है। यद्यपि इनकी कविता चमत्कारपूर्ण है, तथापि पद्माकर की कविता के बराबर नहीं है। इनके ग्रंथों का नाम माधवप्रिया और नखशिख है। इनकी उपमा तथा अनुप्रासों को सुनकर मनुष्य स्वयं ही प्रशंसा करने लगता है। इनकी कविता में शब्द तथा वचनों की अति सरलता है, वह कानों को रोचक मालूम होती है; परन्तु अर्थ में गुरुता नहीं है। सामान्यता होने पर भी कवियों में इनका बड़ा सम्मान है।

ठाकुर नाम के भी दो कवि हुए हैं। हिन्दी-कविता में ये बड़े प्रसिद्ध हैं। पहले ठाकुर कवि १७ वीं शताब्दी के मध्य में मुहम्मदशाह बादशाह के समय में हुए थे। इनकी

फुटकर कविता, जो बड़ी सुन्दर है, कई हज़ार कवित्तों में मिलती है, परन्तु इनका कोई संपूर्ण ग्रन्थ अभी तक नहीं मिला। इनके निवास-स्थान का ठीक पता नहीं लगा है। कोई कहता है कि ये असनी गाँव के रहनेवाले थे और कितनों ही का कथन है कि बुन्देलखण्ड के निवासी थे।

दूसरे ठाकुर कवि जाति के ब्राह्मण और रायबरेली ज़िले के एक गाँव के रहनेवाले थे और १८२५ या १८६७ ई० के मध्य में इनका जन्म-समय बताया जाता है। काव्य-ग्रंथों की खोज में इन्होंने हिन्दुस्तान में दूर दूर तक भ्रमण किया और बहुत से ग्रंथों का संग्रह भी किया। इनका बनाया ग्रंथ रसचंद्रिका बड़े नामी काव्यों में है। ठाकुर कवि के नाम से बहुत से फुटकर कवित्त पाये जाते हैं।

वाक्य-विचार की उत्तमता इनमें विशेष है। इनके विषय में ठीक नहीं कहा जा सकता कि ये पहले ठाकुर कवि के हैं या दूसरे के।

भवन कवि उन्नाव ज़िले के निवासी ब्राह्मण थे। १८३४ ई० में इनका जन्म हुआ था। इनके रचे हुए काव्यकल्पद्रुम की प्रशंसा सब विद्वान् करते हैं। भवन हिन्दी के धुरन्धर कवियों में हैं। इनकी कविता पढ़ने योग्य है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में काशी-निवासी बाबू गोपालचन्द्र के पुत्र बाबू हरिश्चन्द्र हुए। ये इस समय की हिन्दी का प्रबल प्रचार करनेवाले गिने जाते हैं। इनके रचित

सुन्दरीतिलक और दूसरी फुटकर कवितायें ऐसी प्रसिद्ध हैं कि उनका वर्णन करना आवश्यक नहीं है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में आगरानिवासी राजा लक्ष्मणसिंह ने रघुवंश, शकुन्तला, मेघदूत आदि कालिदास-कृत काव्य-ग्रन्थों का अनुवाद उच्च श्रेणी की हिन्दी-भाषा में किया। ये हिन्दी-कवियों मे सबसे पिछले प्रसिद्ध कवि थे।

इस पुस्तक में जिन हिन्दी-कवियों का वर्णन किया गया है उनका समय-सूचक सूचीपत्र।

कवि का नाम	समय
१ चन्द्र	... १०९२ ई०
२ शार्ङ्गधर	... १२७३ ई०
३ कबीर	... १३९९ से १५१९ ई०
४ नानक	... १४६९ से १५३९ ई०
५ नाभादास	... १४८३ ई०
६ मीराबाई	... १४९८ से १५६३ ई०
७ गंग	... १५३८ ई०
८ तुलसीदास	... १५४४ से १६२४ ई०
९ बिहारी	... १५४४ ई०
१० केशवदास	... १५६७ ई०
११ सूरदास	... १५८३ ई०
१२ स्वामी हरिदास	... १५८३ ई०
१३ देव कवि	... १५८४ ई०
१४ सबलसिंह चौहान	... १६७० ई०
१५ भूषण (भूखन)	... १६८१ ई०
१६ मतिराम	... १६८१ ई०
१७ श्री गुरु गोविन्द	... १६८१ ई०
१८ कालिदास	... १६९२ ई०
१९ गिरधर	... १७१३ ई०

कवि का नाम	समय
२० ग्वाल	... १७१६ ई०
२१ भिखारीदास	... १७२३ ई०
२२ पद्माकर	... १७८१ ई०
२३ पजनेश	... १८१५ ई०
२४ ठाकुर प्रथम	... १८२५ से १८३७ ई०
२५ ठाकुर द्वितीय	... १८५० ई०
२६ भवन	... १८३४ ई०
२७ बाबू हरिश्चन्द्र	उन्नीसवीं शताब्दी के पिछले भाग में
२८ राजा लक्ष्मणसिंह	

दूसरे प्रसिद्ध हिन्दी-कवियों का समय-सूचक सूचीपत्र जिनका वर्णन इस पुस्तक में नहीं है।

कवि का नाम	समय
१ टोडरमल	... १५२३ ई०
२ मानदास	... १५२८ ई०
३ ब्रह्मकविर	... १५२८ ई०
४ गोप	... १५३७ ई०
५ कृष्णदास	... १५४४ ई०
६ अमरसिंह हाड़ा	... १५६४ ई०
७ कवीन्द्र सरस्वती	... १५६५ ई०
८ प्रेमराय	... १५८३ ई०
९ हरस्वामी	... १५८३ ई०
१० हीराराय	... १५८३ ई०
११ हरिनाथ	... १५८७ ई०
१२ निपटनिरञ्जन	... १५९३ ई०
१३ देवकरण	... १६०८ ई०
१४ जयसिंह	... १६२४ ई०
१५ छत्रशाल	... १६३३ ई०
१६ तोष कवि	... १६४८ ई०
१७ देवीदास	... १६५३ ई०
१८ नायकगोपाल	... १६५८ ई०
१९ वनमालीदास	... १६५९ ई०

कवि का नाम	समय
२० सुखदेव मिश्र	... १६७० ई०
२१ चिन्तामणि	... १६७२ ई०
२२ सदाशिव	... १६७७ ई०
२३ बुधराउ	... १६९८ ई०
२४ मान कवीश्वर	... १६९९ ई०
२५ जुगुलकिशोर	... १७०८ ई०
२६ बन्नू कवि	.. १७१३ ई०
२७ कृपाराम	... १७१५ ई०
२८ अजीतसिंह राठौर	... १७३० ई०
२९ कर्म कवि	... १७३० ई०
३० विजयसिंह	... १७३० ई०
३१ शिव कवि	... १७३९ ई०
३२ जगत्सिंह	... १७४१ ई०
३३ रघुनाथ	... १७४५ ई०
३४ गुमानजी	... १७४८ ई०
३५ कृष्णानन्द वासुदेव	... १७४९ ई०
३६ बलदेव	... १७५२ ई०
३७ गोकुलनाथ वेदी	... १७७७ ई०
३८ खुमान	... १७८३ ई०
३९ सूदन	... १७८३ ई०
४० गोपीनाथ	... १७९३ ई०

कवि का नाम	समय
४१ विश्वनाथ	... १७९४ ई०
४२ जसवन्तसिंह	... १७९८ ई०
४३ सहजराम	... १८०४ ई०
४४ देवकीनन्दन	... १८१३ ई०
४५ श्रीधर	... १८१४ ई०
४६ खेमकरण	... १८१८ ई०
४७ शिवसिंह	... १८२१ ई०
४८ ठाकुरप्रसाद	... १८२५ ई०
४९ सुन्दर	... १८३१ ई०
५० गंगाप्रसाद	... १८३३ ई०
५१ शीतलराउ	... १८३७ ई०
५२ छेदीराम	... १८३८ ई०
५३ नरहरि	... १८४१ ई०
५४ जय कवि	... १८४४ ई०
५५ भोजकन्द	... १८४४ ई०
५६ कृष्णासह	... १८५२ ई०
५७ गदाधर भट्ट	... १८५५ ई०
५८ उमापति	... १८७३ ई०
५९ जसुराम	... ...